कूका आंदोलन का पहला उत्तराधिकारी

सूबा
साहब सिंह

लेखक
प्रीतमसिंह कवि

कूका आंदोलन का पहला उत्तराधिकारी

सूबा
साहब सिंह

प्रीतमसिंह कवि

हिन्दी रूपांतर : :ांता प्रीतम

नामधारी दरबार, श्री भैणी साहब

यह पुस्तक सूबा साहबसिंह :ाहीदी :ाताब्दी को समर्पित है। श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी ने गुरु-गधी का दायित्व संभालने के बाद अपने आदरणीय बुजुर्गों के दिवस मनाने की ओर वि-ोश ध्यान दिया है। आपके आदे-ाानुसार सत्गुरु रामसिंह निर्वासन :ाताब्दी समस्त दे-ा के नामधारियों और विदे-ाों में रहते सिखों ने धूमधाम के साथ मनाई। इस अवसर पर पर्यापत साहित्य का प्रका-ान और स्थान-स्थान पर आयोजन किये गये। मुख्य आयोजन ब्रिटेन की राजधानी लंदन में था।

नामधारी दरबार ने इस वर्श को सूबा साहबसिंह :ाहीदी :ाताब्दी वर्श के रूप में मनाने का फ़ैसला किया है। सूबा साहबसिंह के गाँव बरमालीपुर में एक वि-ोश आयोजन से लेकर :ाताब्दी का समापान 10 जून, 1979, में हज़ारीबाग में करने का कार्यक्रम था।

नामधारी विद्यक जत्थों ने भी सूबा साहबसिंह को श्रद्वाजंलि देने के कार्यक्रम बनाये। यह भी फैसला हुआ कि इस अवसर पर सूबा साहबसिंह पर एक पुस्तिका लिखी जाये, इसकी ज़िम्मेदारी नामधारी दरबार में मेरे जिम्मे डाली।

श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी की अपार कृपा और नामधारी दरबार के महासचिव स. हरबिन्दर सिंह के सहयोग से यह पुस्तिका पाठकों के हाथ में है।

मैं अपने दामाद स. केहरसिंह हमराही और सपुत्री बीबी कुलवंत कौर का भी ऋणि हूँ जिनकी भुंतर (कुल्लू) में रिहाय-ा’ होने के कारण मैं उनके पास कुछ दिन रहकर अनुकूल वातावरण में इस कार्य को कर पाया। यदि यह पुस्तिका पाठकों को सूबा साहबसिंह के संबंध में सही जानकारी दे सकी, तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा।

प्रीतमसिंह कवि

सूबा साहबसिंह

भारत माँ के सच्चे सपूत, गुरु रामसिंह जी के वि-वासपात्र सूबे और पंजाब के एक बुद्धिमान दे-ाभक्त का देहान्त हुए पूरे सौ वर्श हो गये है। उनका देहान्त हज़ारी बाग की योरुपियन पैनन्टेने-ारी (जेल) में 10 जून, 1879 को हुआ था।

20 अगस्त, 1879 को जेलों के इंसपेक्टर ने अलीपुर (बंगाल) से एक डिस्पैच में रैडी रिफ़रैस के लिए बंगाल सरकार को एक कापी, मृत्यु की सूचना इस तरह देते हुए भेजी ’छोटे कैदी साहबसिंह की योरुपियन जेल में 10 जून 1879 को मृत्यु हो गयी है। एक दुर्बल और जर्जर बूढ़ा, काहन सिंह जो 70 वर्श से भी अधिक आयु का है। 16 कमरों के समूचे भाग पर कब्ज़ा किये हुए योरुपियन जेल में अब भी जीवित है।

वास्तव में जेलों का इंस्पेक्टर इस जगह को खाली करवाना चाहता था और सूबा काहनसिंह को किसी दूसरी जेल में भेजना चाहता था। लंबी चिट्ठी में यह लिखकर कि उस अकेले का अब यहाँ दिल नहीं लगता। जैसे कि ब्रिटि-ा सरकार बहुत दयालु और मानवीयस भावनाओं के प्रति इतनी संवेदन-ाील हो कि किसी कैदी के दिल न लगने तक का भी ख़याल रखती हो।

उस वीर दे-ा-प्रेमी को भारत की धरती पर केवल पैंतालीस वर्श जीने का अवसर मिला। इसमें से उसने पन्द्रह वर्श पंजाब में पुनः खालसा राज्य को स्थापित करने की लड़ाई पर लगाये और आठ वर्श इस संग्राम की सज़ा के उपलक्ष में काटे।

जिस स्वतंत्रता का आज हम उपभोग कर रहे हैं, इसकी गहरी नींव में किन-किन लोगों के प्राण, रक्त तथा अस्थियाँ निहित हैं- कौन जानता है। इतिहास भी उन लोगों का ही ज़िक्र करता है जो किसी उदार लेखक की नज़र में आ गये- अन्यथा कौन परवाह करता है उन परवानों की जिन्होंने सच्ची लगन से अपना सर्वस्व दे-ा के लिए न्योछावर कर दिया।

वैसे तो समूचा नामधारी आन्दोलन इतिहासकारों के संकुचित दृश्टिकोण का -िाकार रहा है, पर गुरु रामसिंह जी के बलिदानी अनुयाइयों का ज़िक्र तो कभी कोई बिरला ही करता है। सूबा साहबसिंह भी उन दृढ़संकल्प-कर्मयोगी, बलिदानियों में है जिन्होंने ब्रिटि-ा सरकार के विरूद्ध तमाम

उग्र संघर्श किया। अपनी धुन और चतुराई से स्वतन्त्रता की दीपशिखा को सदा प्रज्जवलित रखा– पर उसकी चर्चा बहुत कम है।

सूबा साहबसिंह के जीवन के विशय में जो प्राप्त सामग्री है उसे क्रमबद्ध करने से पहले ब्रिटिश सरकार द्वारा किया गया उसका मूल्यांकन यहाँ दे रहे हैं ताकि प्रतिभावान साहबसिंह की गतिविधियों का हम सही अनुमान लगा सकें।

पंजाब का सैशन जज मि. मैकनाब, जिसे पिछले कुछ समय से 'कूका' से सम्बन्धित देशों में गवाहियाँ लेनी पड़ीं और जिसके निर्णयों का नामधारी समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा, उसने सूबा साहबसिंह के विशय में एक नोट में लिखा : (साहबसिंह) बुद्धिमान, चतुर, दृढ़ निश्चय वाला तथा सूबों में एक योग्य आदमी है। (गुरु रामसिंह एंड दी कूका सिखस; कम्पाइलर– नाहरसिंह पृश्ठ 91।

मि. मैकनाब की रिपोर्ट पर पंजाब सरकार ने गवर्नर जनरल को लिखा :

''यह सम्भव है कि एक आदमी केवल अपनी पदमी में ख़तरनाक हो सके? अपने प्रभाव तथा पदवी का ज़िक्र न करके जैसे साहबसिंह गुरु रामसिंह जी का सम्भावित उत्तराधिकारी है।

''...:गुरू करने के लिए, चाहे पहला आदमी साहब सिंह है। साहबसिंह (गुरु) रामसिंह का, पिछले, नेपाल जाने वाले मिशन में राजदूत था। यह सब पुलिस अफ़सरों की किताबों में दर्ज है। जैसे ''(गुरु) रामसिंह का आशातीत उत्तराधिकारी' उसका 'खुफिया सूबा', (गुरु) रामसिंह का लैफ्टीनैंट सदा (गुरु) रामसिंह के साथ, 'सब में सर्वाधिक सम्मानित सूबा।'...

मि. मैकनाब ने उसे पढ़ा-लिखा, महत्वाकांक्षी, चालबाज और (गुरु) रामसिंह की सदैव उत्प्रेरित करने वाला बताया है।

पंजाब सरकार नोट करती है, 'मि. मैकनाब सोचता है कि यदि सिर्फ़ उस अकेले को पंजाब में भेज दिया जाये तो 'कूकाइज़्म' एकदम पुनर्जीवित हो उठेगा और (हमारे लिए) घातक सिद्ध होगा।'

(गु. रा. एंड. दी कूका सिख़्स पृश्ठ 101, 102)

पृश्ठ–भूमि

साहबसिंह उस समय सतृगुरू रामसिंहजी के सम्पर्क में आये जब (गुरु रामसिंह) विशाल पंजाब खालसा के हाथों से खोये और अँग्रेज द्वारा हथियाये जा चुके खालसा राज्य की पुर्नस्थापना के

सपने को साकार करने के लिए अभी भी सुलगती :ाक्तियों को एकत्रित कर रहे थे। गुरु गोबिन्दसिंह जी ने 1699 ई. में सिक्खों को अमृत छका कर तथा उनसे स्वयं छक कर ऐसे समाज की नींव रखी जो केवल पूजा-भक्ति करने वाला ही नहीं, अपितु राज-भाग प्राप्त करने तथा :ाासन करने वाला भी बन सके। चाहे द-ामे-ा पिता अपनी इस कामना को अपनी जीवन में फलीभूत न कर सके किन्तु अपने पीछे ऐसे :ाूरवीरों को ज़रूर छोड़ गये, जो मुगल राज्य की असह्य यातनाओं को झेलकर एक दिन ऐसे लुटेरों के रूप में आ गये जिन्होंने खींचातानी करके अपनी-अपनी रियासतें स्थापित कर ली। राजपाट के अहम ने भीशण लड़ाइयाँ लड़कर, अंत में महाराजा रणजीतसिंह की पात-ााही का रूप ले लिया। और इस प्रकार स्थापित किये गये खालसा राज्य की सीमाएँ यमुना से दरा खैबर तक, का-मीर से सिंध के मैदानों तक फैल गई।

दूसरी ओर, पूर्व की तरफ़ से एक राहु खालसा राज की ग्रसने के लिए कई प्रकार की भोजना बना रहा था। यह इंग्लैंड के छोटे-से टापू में से उठे अति बुद्धिमान लुटेरों का व्यवस्थित संगठन था, जो पहले 'कम्पनी सरकार' और फिर ब्रिटि-ा राज की सŸाा लेकर हमारे महान दे-ा, भारत पर आधिपत्य स्थापित करके में सफल हो गया था।

संसार भर में एक छत्र :ाासन करने को इच्छुक यह विदे-ाी राज पहले से बने :ास्त्रों से अधिक तेज़ और :ाक्ति-ााली हथियारों का मालिक था। और इंग्लैंड में हुई वैज्ञानिक उन्नति के कारण म-ाीनों द्वारा तैयार किये गये कपड़े और अन्य वस्तुओं की बहुतायत से बचने के लिए वि-ााल मंडियों की खोज में था।

भारत में अँग्रेंज :ाासकों की पंजाब राज पर गिद्ध-दृश्टि लगी हुई थी। महाराज रणजीत सिंह जैसे दूरद-ार्ी, तीक्ष्ण बुद्धि तथा कूटनीतिज्ञ की मृत्यु के प-चात् खालसा राज ़ाड्यन्त्रों का अखाड़ा बन गया। पारस्परिक मतभेद स्वार्थ तथा अन्य कुरीतियों के कारण खालसा राज के सभी दावेदार दस वर्शों में ही अँग्रेंज की कुटिल नीति ने किनारे लगा दिये तथा ब्रिटि-ा साम्राज्य ने 1849 में समूचा निगल लिया। महारानी जिन्दा, दर-दर भटकती रही तथा उनके उŸाराधिकारी दलीपसिंह को कुछ समय बाद विलायत भेजकर पंजाब के लिए 'सब अच्छा' कर लिया गया।

बड़े बड़े सरदारों, जागीरदारों, नवाबों, राजाओं महाराजाओं को डरा, धमका, ़ाड्यन्त्रों में फँसाकर, सन्धियाँ करके जब अँग्रेंज पंजाब में राज का मालिक बन बैठा, तक लुधियाने ज़िले के एक

पिछड़े-से ग्राम के साधारण बढ़ई परिवार के सदस्य रामसिंह ने वह दर्द-अनुभव किया जो दे-ा के किसी महान व्यक्ति, दे-ा हितैशी मे मन में भी उत्पन्न हो सकता था। गुरु रामसिंह जी ने खालसा राज की फ़ौजी नौकरी के समय में जो कुछ देखा वह इस प्रकार थाः- परस्पर फूट, भोग विलासिता, सिक्खी मर्यादा तथा संस्कृति का तिरस्कार, लूट-खसूट तथा चरित्रहीनता का बोलबाला था।

वास्तव में गुरु रामसिंह जी समय की पुकार थे उन्होंने कुछ दिन के एकान्त तथा कर्म निश्ठता अपनाकर दे-ा के रोग की दवा तला-ा कर ली। यह परतन्त्रता के विरूद्ध चरित्र निर्माण तथा आध्यात्मिक उत्थान की त्रि-पक्षी प्रभाव-ााली औशधि थी।

समाज के चरित्र को ऊँचा उठाने के लिए आपने अपने पूर्वज सत्गुरूओं की वाणी को आधार बनाया। नाम सिमरन को अपनाया। इन से मनोबल बढ़ता है तथा चरित्र-निर्माण में एक विलक्षण दृढ़ता आती हैं यह औशधि हर व्यक्ति के प्रयोग की थी।

दूसर पक्ष का समूचे समाज के कल्याण का। जिसमें स्त्री को पुरूश के बराबर दर्जा देना, कन्याओं को न मारना न बेचना तथा न बदलना तथा विधवाओं को पुनर्विवाह करने का अवसर देना, भूत-प्रेतों का जादू-टोनों में वि-वास न करना, अनहोनी के भय से मुक्ति पान, जाति-पाति के बन्धन को तोड़ना, दहेज न देकर सादे विवाह करना आदि...

तीसरा पक्ष था- विदे-ी राज से छुटकारा। इस महान कार्य के लिए चतुराई से संगठित होना, लोगों में स्वतन्त्र होने की भावना को जागृत करना। इसके लिए आधार बनाये गये-विदे-ी राज के लिए चोर नफरत, अँग्रेज नौकरी का बहिश्कार, अँग्रेंजी अदालतों का बहिश्कार, अँग्रेंजी डाक-तार व्यवस्था तथा विदे-ी कपड़ों तथा अन्य वस्तुओं का भी वहिश्कार।

इस त्रिपक्षीय निर्माण तथा उत्थान के प्रभाव में लोग इस प्रकार स्वयंमेव ही आ गये जैसे यह उनका ही सपना हो। गुरु रामसिंह जी का सादा तथा पवित्र आचरण और उनके स्थापित नेताओं का चरित्र ऐसा था कि सभी को अपना मनोरथ पूर्ण होता लगता था।

इन उपरोक्त बातों पर विचार करने से ज्ञात होता है कि एक छोटे-से गाँव के साधारण व्यक्ति ने इतना महान अतः दृढ़ संकल्प किया, महत्वपूर्ण कार्यों की आव-यकता को समझा। क्या उस समय उनके समान कोई अन्य प्रतिभा-ााली व्यक्ति नहीं था जो दे-ा का सही नेतृत्व कर सकता ?

गुरु रामसिंह जी तथा उनके सूबों का जिनकी उन्होंने अपने सारे अधिकार दे रखे थे (अपनी

सर्वोच्च पदवी के अतिरिक्त) ऐसा सार्थक प्रभाव था कि केवल पाँच सात वर्शों में गाँव के गाँव, तथा आसपास के प्रदे-गों में बसने वाले लोग इस आंदोलन में :ामिल हो गये। पौ फटने से भी पहले उठना, :ौच आदि से निवृत हो स्नान करके पूजा-पाठ करना, सफेद खादी के वस्त्र धारण करना, एक फ़ै-ान हो गया। विकार मिटने लगे तथा दैवी गुणों का प्रसार होने लगा।

यहाँ हमें उस समूचे आंदोलन का सर्वेक्षण नहीं करना है। केवल यह स्पश्ट करना है कि साधारण से गाँव में से उठे यह विचार राश्ट्र तथा राजनैतिक जीवन को प्रभावित करने लगे। जाति-पाति के अन्तर से रहित, इन्हें अपनाने वाले निर्धन तथा मज़दूर, बढ़ई, लोहार आदि साधारण लोग थे। अतः इनका इतना विकास हो गया कि बड़े-बड़े जागीरदार भी इस उभरती हुई :क्ति को आ-ामयी दृश्टि से देखने लगे। कईयों को पुनः खालसा राज की स्थापना के सपने आने लगे और वे इस नवीन :क्ति केन्द्र के निकट आने की आव-यकता अनुभव करने लगे।

वे लोग भी थे जो सरकार माई-बाप की य-ा गाथा गा-गा कर ऊँची पदवियों, और सुरक्षित सरदारियों के मालिक बन चुके थे, उन्हें इस विदे-ी राज का भागीदार बनाया गया तथा नयी -िक्षा देकर उन्हें विदे-ी तंत्र की सहायता और स्थिरता के लिए आ-वासन दिलाया गया।

खालसा राज के इच्छुक और विदे-ी राज के चापलूसों के मध्य टकराव होना स्वाभाविक था। अँग्रेंजों ने अपने राज को बचाने के लिए, तथा प्रसार के लिए हर नीति को अपनाया। सिक्खों में गुरु रामसिंह जी के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए धनवानों, सरदारों, ज़ागारदारों और स्वार्थी बुद्धिमानों को एकत्रित करके प्रचार का साधन बनाया। कुछ समय प-चात कूका आंदोलन अपनी तेज़ तथा जल्दबाजी के कारण असफल रहा तब सिंह सभा जैसे आंदोलनों को संगठित तथा उत्साहित करके गुरुवाणी में गुरुओं की -िक्षा को एकदम उलट-पलट करने में सफलता प्राप्त कर ली ताकि भविश्य में कोई भी एक व्यक्ति अपने प्रभाव द्वारा राज-काज में बाधक सिद्ध न हो।

ग ग ग

गुरु रामसिंह जी के इस जारी संघर्श में जो पहले पाँच, फिर ग्यारह और फिर आइस सज्जन कंधे-से-कंधा मिलाकर डटे रहे, उनमें साहबसिंह सर्वप्रथम है। उन्नीसवीं सदी के प्रारंभिक वर्शों में भैणी साहब अँग्रेंज सरकार विरोधी केन्द्र के तौर पर स्थापित हो चुका था। इसके मुख्य स्तम्भ तो निस्संदेह गुरु रामसिंह जी ही थे, पर हर प्रकार के सहयोगी तथा सलाहकार व्यक्ति भी थे-

(क) बाबा जवाहरसिंह - भाई की डरोली

(ख) बाबाा काहनसिंह - निहंग चक रियासत मलेर कोटला।

(ग) बाबा लखासिंह - मलौद, जि. लुधियाना।

(घ) बाबा साहबसिंह - बरमालीपुर, जि. अमृतसर

(ङ) बाबा सुधसिंह - मढौर, जि. अम्बाला

जब 1863 से 1867 तक विदे-ी सरकार ने गुरु रामसिंह जी को एक तरह से भैणी साहब में ही नज़रबंद कर दिया, तब उनका संदे-ा घर-घर पहुँचाने के लिए सूबों की प्रथा प्रचलित की गयी। यह सूबे पृथक-पृथक जिलों तथा प्रदे-ों के मुखिया थे। यह नामधारी मि-ान का प्रचार करते, पारस्परिक उलझनों को सुलझाते, आपसी झगड़ों का निपटारा करते। भजन बताकर, अमृत छकाकर दूसरों को अपने मत में सम्मिलित करते, मेले आदि कराते। प्रसिद्ध सिक्ख इतिहासकार ज्ञानी ज्ञानसिंह ने लिखा है कि सूबों की वाणी में भी गुरु रामसिंह जी सरीखी विलक्षण प्रभाव-ाक्ति थी।

दूसरी कि-त में उपरोक्त सूबों के अतिरिक्त जो सूबे बनाये गये उनके नाम निम्नलिखित है-

(च) बाबा रूढ़सिंह - बरमालीपुर, जि. अमृतसर

(छ) बाबा पहाड़ासिंह - मलौद, जि. अम्बाला

(ज) बाबा मानसिंह - सैदो, जि. फ़िरोजपुर

(झ) बाबा हुकमसिंह - पित्थो, रियासत नाभा

(ञ) बाबा ब्रह्मा सिंह - दरियापुर, कैंथल

(ट) सरदार मंगलसिंह - वि-ानपुरिया।

और तीसरी बार फिर प्रचारकों को बढ़ाने के लिए निम्नलिखित सूबे स्थापित किये गये। इनके साथ बाइस सूबों को संख्या पूर्ण हो गयीः

(ठ) बाबा सरमुखसिंह - ललुवाल रियासत पटियाला

(ड) बाबा गोपालसिंह - मढौड़ रियासत पटियाला

(ण) बाबा रतन सिंह - उर्फ़ ज्ञानिसिंह मंडी।

(त) बाबा खु-ाहालसिंह - पराज हिसार

(थ) बाबा नारायणसिंह - खटड़े, लुधियाना

(द) बाबा समुन्दसिंह- फुले वाल

(ध) बाबा समुन्दसिंह - गाँव खोटे, फ़िरोज़पुर

(न) बाबा खज़ानसिंह - लधाणा, जालंधर

(प) बाबा भगवानसिंह - फत्तेबाल, अमृतसर

(फ) बाबा जमीयतसिंह गिल - सियाल कोट

(ब) बाबा जीतासिंह - ढपई, सियालकोट

इस प्रकार इन वि-वासपात्र सिक्खों और साथियों को साथ लेकर गुरु रामसिंह जी पुनः स्वतंत्रता संघर्श में लगे रहे। यहाँ न तो हम गुरु रामसिंह जी का इतिहास लिख रहे है और न ही उस प्रारम्भिक अहिंसक स्वतंत्रता-संग्राम की व्याख्या कर रहे है जो आगे चलकर महात्मा गांधी के विचारों का आधार तथा स्वतंत्रता प्राप्ति का माध्यम बना। यहाँ तो केवल सूबा साहब सिंह के योगदान तथा पर्याप्त जीवन-गाथा का वर्णन करना है।

आगमन

साहबसिंह जी तब 24-25 वर्श के युवक थे जब गुरु रामसिंह जी के पास आये। गुरु रामसिंह जी ने अपने मि-ान द्वारा समाज-सुधार तथा धर्म-प्रचार तो करवाये, साथ ही 1857 में खालसा राज की प्राप्ति की इच्छा भी जागृत करा दी थी। इससे पहले उन्होंने कुछ वि-ोश व्यक्तियों को सपनों, दैवी संदे-ाों भेंटों के द्वारा बुलाया था। इन प्रारम्भिक दिनों में ही साहबसिंह सत्गुरु जी के समीप आ गये।

ज़िला अमृतसर, तहसील तरन-तारन, गाँव बरमालीपुर का गोरा, पतला, दरम्याने क़द, सुगंठित :ारीर का यह कि-ाोर अभी सोलहवें वर्श में ही था। (जन्म 1834 ई.) जब यह उदासी साधुओं का चेला बन गया। थोड़ा-बहुत अक्षर ज्ञान तो पहले ही से था, अब किसी विद्वान उदासी के प्रभाव के नीचे आकर आग पढ़ने की उत्कंठा से इसने अपना पैतृक काम बढ़ईगीरी का त्याग कर दिया। अपने पिता-भाई दयालसिंह जी को मनाकर यह साधुओं की मंडली के साथ चल दिया।

उदासी साधुओं में नागे साधुओं का अपना ही प्रभाव था। लोग इन वस्त्र त्यागी, भभूतिधारी, जटाओं वाले साधुओं का भगवान ि-ाव का रूप, भगवान श्रीचन्द की ज्योति स्वरूप मानकर पूजते थे। हमारे साहबसिंह जी भी नागे साधुओं की मंडली की :ाोभा बने।

धीरे-धीरे इन्होंने भी एक छोटी-सी नागे साधुओं की एक श्रेणी की महंती प्राप्त कर ली। अपनी कार्य-कु-ालता, बुद्धि की तीक्ष्णता के द्वारा साहब सिंह जी ने अपने महंत को रिझा लिया तथा वह एक स्वतंत्र :ाखा का सरदार बन गया।

आसपास के ग्रामों में, :ाहरों में इस युवक साधु की मंडली जाती। जोहड़ों के किनारे, :म-ाान के निकट किसी बड़ तथा पीपल की घनी छाँव के नीचे डेरा डालती। उपले तथा लकड़ियाँ मँगवाकर धून जलवाती। प्रातः उठकर वृद्ध साधु युवक साधुओं की और :ंख और नरसिंगो में फूँक मारकर ज़ोर से आवाज़ें निकाल कर अपने अस्तित्व का पता देते। जिज्ञासु लोग, जिन्हें बाहर के कोई वि-ोश काम नहीं होते थे इनके गिर्द बैठे दर्-ान करते तथा विचार-विमर्-ा करते।

इसी प्रकार एक दिनः-

पूत सपूत सत्गुरु नानक देव के
श्री चन्द महाराज, उदासी वे-ा के
सभी प्रवर्तक लोग उसकी जानते
जी नाग अवधूत मंडलियाँ फेरते
सुनी उन्होंने :ोभा भैणी साहब की
'कूके' की अब कूक उजागर हो गयी
फैल गयी सुगन्ध बीच पंजाब के
सन्त उदासी आये :ाुभ संदे-ा ले
मोहित हुआ महन्त गुरु के दर्-ान कर
नाम जिनका था श्री ब्रह्म :ाुद्ध
ब्रह्म बूटी संत की वह जला-जला
खोल जटायें के-ा फिर बनवा लिए
हो गये यह तत्पर अमृत छकने को
उन्नीस सौ थी सोलह सम्वत् विक्रमी।

(मालवेन्द्र, संत इन्द्रासिंह चक्रवर्ती)

गुरु रामसिंह जी का नोग साधुओं से पहले से ही संबंध था। फौजी जीवन में यह कोट वाले

नागे साधु को अच्छे साधुओं में मानते थे। एक बार उन्होंने पत्नी जस्सां जी की बेटी और जँवाई के लिए सँभाल कर रखा खानोंवाला खेस उन्हें भेंट कर दिया था। फिर एक बार नागे साधुओं की एक मंडली कुएँ के पास बड़ के पेड़ के नीचे आकर ठहरी, पर भैणी साहब के लोगों ने उनका स्वागत तथा सम्मान न किया, न ही उनको खाने-पीने के लिए कुछ भेजा। श्री गुरु रामसिंह ही थे जिन्होंने चलता रहट छोड़कर पर से आटा, दाल, गुड़ तथा दूध साधुओं के समक्ष लाकर रख दिया।

पर अब रामसिंह जी गुरु थे, सत्गुरु, ऊँचे आद-र्ां, लक्ष्य वाले। नागे साधुओं की इस मंडली के महन्त की सन्यास में से निकालकर दे-ाहित के लिए समर्पण के मार्ग पर डाल दिया। एक युवक साधु का लक्ष्य केवल साधु समाज में मंहती की प्राप्ति मात्र था किंतु सत्गुरु ने उसको एक व्रह्त्समाज लाखों की गणना में आने वाली मंडली का महन्त बनने का सपना दिखाया। इस समय सत्गुरु जी की आयु चौबालीस बरस तथा संन्यास छोड़कर सेवक बना ब्रह्म ाुद्ध या सुते प्रका-ा केवल पच्चीस बरस का था। सत्गुरु के तेजस्वी मुखमंडल और वि-वासयुक्त वाणी ने युवक को मोह लिया। भजन पूछकर, अमृत छककर नामधारी सिख बन कर और अपने साथियों को भी सिख बनाकर, वापस 1859 ई. में वह बरमालीपुर, पिता दयालसिंह के पास गया।

थोड़े समय के बाद साहबसिंह फिर भैणी साहब आ गया। उसे अपने पिता के साथ पैतृक कारोबार में कोई रुचि नहीं थी। पिछले नौ वर्श तक के साधु-जीवन ने उसके बेकार रहने तथा चेलों में हुक्म चलाने की आदत डाल दी थी। सो वह पिता अनु-ाासन में अब घर पर न ठहर सका।

उसने गुरु रामसिंह जी को बताया कि उसका यही रहने का विचार है। गुरु जी की अनुमति पाकर वह वहाँ रहने लगा। एक दिन गुरु रामसिंह जी ने कहा : ''पहले मैं जब आठ बरस का था तो स्वयं सेवा करता था। भैसें चराता था। अब सेवा करने वाले आ गये है।''

(सत्गुरु विलास, बाबा संतोखसिंह)

इस समय तक भैणी साहब में 20, 25 सिखों का स्थाई डेरा हो गया था। दो समय गुरु का लंगर तैयार होता था तथा आठों पहर जरूरतमन्दों को प्राप्त हो जाता था। डेरे से संबंधित सभी कार्यों को डेरे के सदस्य करते थे। इस नये तीर्थ की यात्रा के लिए भी लोग आने लगे थे। पिछले दो ढाई वर्शों में गुरु रामसिंह जी का पुण्य प्रताप काफी बढ़ गया था। आमदनी के साधन भी बढ़ गये थे। लोग जाते सत्गुरु जी को मत्था टेकते, लंगर के लिए अन्न, धन अर्पण करते तथा पुनः स्वतंत्र

हो सकने का सपना लिये वापिस जाते।

उŸारदायित्व

मनोविज्ञान सत्‌गुरुओं का स्वाभाविक गुण होता है। जितने अधिक लोगों के वह सम्पर्क में आते हैं, उतना ही उन्हें मानवीय स्वभाव की गहरी परख होती जाती है। सो हर एक को उसकी योग्यतानुसार काम देना उनकी एक सहज क्रिया हो जाती है। साहबसिंह के विशय में भी उन्होंने जान लिया था कि जो आदमी आरी-खुरपा भी घर पर रह कर न चला सका, वह डेरे के प-ु कैसे चरायेगा।' उसे गुरु रामसिंह जी ने दुकानदारी का लिखित-पढ़त का काम सौंप दिया। डेरे की दुकानदारी का अर्थ था संबंधित लोगों को उनकी आव-यकतानुसार वस्तुएँ देना। पहले तो यह दुकानदारी लोगों के लिए थी, अब यह साधुत्व की ओर झुकाव रखती थी। इसके साथ ही डेरे में रहने वाले स्त्री-पुरूशों को साहबसिंह जी गुरमुखी अक्षरों का ज्ञान कराते और गुरु ग्रन्थ साहब का पठन-पाठन सिखाते।

अपनी सहज कार्य-कु-ालता से अमृतसर के उस युवक ने डेरे के सेवकों का मन मोह लिया। तथा सत्‌गुरु रामसिंह जी की आत्मीयता भी जीत ली। सत्‌गुरु जी इस चतुर-बुद्धिमान को हर समय साथ रखते। तब तक सत्‌गुरु जी ने पहरावे की बनावट पैरों में पहनने की लड़ाऊँ, उनकी माला की गाँठें, आसन और गड़वा आदि को प्रयोग में ले आये थे। साहबसिंह जी नामधारी पहरावे में खूब सजीले लगते। सदैव सत्‌गुरु जी के साथ रहकर कुछ प्रमुख बातों को सीखते। सत्‌गुरु जी भी उससे सलाह म-ाविरा करके उसका आदर करते।

समर्पण

इस प्रकार दो साल व्यतीत हो गये। 1861 तक अनुयाइयों का घेरा पहले से अधिक विस्तृत हो गया। साहबसिंह को भी आभास होने लगा कि वह ही सत्‌गुरु के डेरे का प्रमुख व्यक्ति है। अब उसे अपना साधुपन त्यागना उचित ही लगा। एक महान आदर्-ा, एक महान लक्ष्य उसके समक्ष था।

अप्रैल 1861 में हरिद्वार अर्थ कुंभी का मेला आ गया। वै-ााखी के स्नान के लिए हज़ारों लोगों को हरिद्वार जाना था। भैणी साहब में सत्‌गुरु रामसिंह जी ने अर्धकुम्भ के मेले पर जाने का प्रोग्राम बनया। आस-पास के प्रदे-ाों में सूचना दे दी गई। लोगों में धर्म प्रचार या हरिद्वार के डेरों

और मेले का रंग-ढंग जानना उनका परम मनोरथ था।

गुरुजी का सारा परिवार और साहबसिंह जी भी कुद दिन पहले सतूगुरु जी के साथ चल दिये।

भैणी साहब से चलकर खन्ना, बाड़ा, अम्बाला आदि स्थानों पर रुकता यह काफिला हरिद्वार पहुँच गया। एक दिन रास्ते में ही खुले मैदान में ही डेरा डालना पड़ा। रात को वर्शा, आंधी तथा ओलों का तूफान आ गया। सिक्खों ने सतूगुरु जी से प्रार्थना की कि कोई करामात दिखाओ। अब तो बुरा हाल है। भीगते, ठिठुरते सिक्खों से कहा : ''जिसने भी भजन वाणी पढ़ी है सब फल दो ताकि ओले-वर्शा बंद हो। ''सिक्खों ने अपनी अपनी भजन बंदगी का फल दे दिया। किसी ने माला, किसी ने वाणी का फल दिया। साहबसिंह जी ने कहा - 'जितना समय मैं जीवित रहूँ, जितनी भजन वाणी करूँ सो सबका फल आपको दे दिया है। उसी समय वर्शा बंद हो गई।''

(सतूगुरु विलास बाबा सन्तोखसिंह)

सब ने करामात देख ली और यह भी जान लिया कि सबकी प्रार्थना का क्या प्रभाव तथा चमत्कार होता है। साहबसिंह जी का समर्पण सर्वाच्च्व था। ऐसे समर्पण की सतूगुरु जी को आव-यकता थी। सतूगुरु जी के पास जो सर्वस्त्र समर्पित करता है वह ही सब कुछ प्राप्त करता है। ऐसे कथित :ाब्दों का मूल्य चुकाने वाला सतूगुरु ही होता है।

समानता

सतूगुरु जी अपने काफ़िले के साथ, जिसमें हरिद्वार में और भी बढ़ोत्तरी हो गयी थी, कुछ दिन हरिद्वार में व्यतीत कर, वै-ााखी स्नान कर जब लौट रहे थे तो फिर बाड़े के स्थान पर रुके। यहाँ सारी उम्र की भजन बंदगी का फल देने वाले साहबसिंह को संकेत रूप में अपनी ओर से सब कुछ दे दिया। यहाँ की वीरान जगहों में, पलाह के आग सरीखे रंग के फूल खिल-खिलकर राही की अपनी ओर बुला रहे थे। गुरु रामसिंह जी भी पलाह के पास गये। गहरे सिंदूरी रंग के केसू के फूल तोड़ लाये। बाबा सन्तोखसिंह 'सतूगुरु विलास' में लिखते हैं : गड्डा सड़क पर खड़ा करके आप गुरु जी कुएँ पर गये तथा केसू पानी में भिगो दिये। एक अपनी दसतार (पगड़ी) तथा एक बाबा साहबसिंह की रंगी।'' जब यह जोगिया दसतारें (पगड़ियाँ) केवल सतूगुरु जी तथा साहबसिंह जी के सिर पर ही सु-ाोभित हो रही थीं- इसके अर्थ सबकी समझ में आ गये थे। इस सुख का अनुसान

साहब सिंह जी ही लगा सकते थे। वह अपने आपको सबसे ऊँचा तथा बड़ा अनुभव करने लगे थे। सतूगुरु अपनी ओर इनकी सर्वाधिक पहुँच देखकर ही इन्हें अपने सरीखा बनाने का विचार कर रहे थे।

उचित उत्तर

भैणी साहब केन्द्र में रहने के कारण साहबसिंह जी के सम्पर्क में काफ़ी लोग आते थे। उन्हें अपनी बुद्धि की प्रखरता का विकास होता लगता। उन्हें हर बार हर समस्या का समाधान जल्दी ही सूझ जाता। इसी प्रकार सतूगुरु जी का काफी कार्य सरल हो जाता। उनकी इस योग्यता का लाभ सतूगुरु जी समय-असमय उठाते रहते।

''एक ब्राह्मण का-ी से आया। सारा दिन बैठा देखता रहा। जो सिख दि-ाा-मैदान जाये, सारें वस्त्र उतार कर जाये। आकर के-ा सहित नहाये। जो अंगोछा लेकर जाये, उसे भी धोये। ब्राह्मण ने कहा- 'ब्राह्मणों के कर्म :ाूद्र वै-य कर रहे है।' बाबा साहबसिंह बोले : 'पंडित जी आप क्रोधित क्यों होते है - यह :ाुद्धता अपने जबरन नहीं छीनी है, हमने तो मर्यादा जो गिरी पड़ी थी - उठाई हैं निरादर होते देखकर आदर किया है।

(सतूगुरु विलास, बाबा सन्तोखसिंह)

दूर निकट का अंतर

सतूगुरु जी के हर समय पास रहने के कारण साहबसिंह जी अनेक कौतुक देखते। कौतुक जिन्हें आजकल सुपर नेचुरल माना जाता है। सतूगुरु जी के हर व्यवहार से साहब सिंह जी अपने मन में अर्थ भी ढूँढते रहते। कई बार ज़िज्ञासा-व-ा कुछ पूछ भी लेते। एक बार साहबसिंह जी ने एक प्र-न पूछा-

''दूर से आने वाले और पास रहने वाले में क्या अंतर है?''

श्री सतूगुरु जी ने बताया- ''चीचड़ थनों के पास ही रहता है तथा बछड़ा खूँटे से खुलकर जाता है, वह दूध पीता है, चीचड़ खून को पीता है। इसी प्रकार निकट रहने वाला श्रद्धा विहीन निरर्थक है।''

(सतूगुरु विलास, बाबा सन्तोख सिंह)

सतूगुरु जी ने उदाहरण देकर बड़ी सारगर्भित बात बता दी थी। इस अवसर पर साहबसिंह जी के मन में जो दुविधा थी, दूर न हुई। अपना महत्त्व जानने के लिए साहबसिंह जी ने कहा : ''हम पास रहते है... हमारा क्या हाल है? आगे सतूगुरु को कौन सिखाये, किसका लिहाज?'' उत्तर मिला : ''तुम जानो।''

सच्चा प्रेम

सतूगुरू जी को निकटता में रह रहे कई जिज्ञासु सेवक अपनी निश्ठता जतलाने के लिए या अपने स्नेह की झलक सतूगुरु जी तक पहुँचाने के लिए भांति भांति के प्र-न पूछते रहते।

साहबसिंह जी को गुरुवाणी के पठन-पाठन के अतिरिक्त और कुछ जचता ही नहीं था। एक दिन उन्होंने प्रार्थना की - ''जू लोग हीर-रांझा बहुत पढ़ते है।'' दीनानाथ जी ने उत्तर दिया- ''उस की सच्ची आ-िकी थी। उन जैसे कलियुग में कोई नहीं है।'

(सतूगुरु विलास बाबा सन्तोखसिंह)

साहबसिंह जी के प्र-न ने सतूगुरु जी के प्रेमियों के विशय में स्पश्ट कर दिया है।

प्रचार

1861 ई. की अर्धकुंभी हरिद्वार से लौटते समय सतूगुरु रामसिंह जी ऐसा वि-वास लेकर आये कि आम लोग अंधेरे और अज्ञानता में इतने भटक रहे है कि हर पाखंड के समक्ष झुक जाते है। इस अवसर पर आपने पंजाब के अलग-अलग क्षेत्रों में दौरा करने का प्रोग्राम बनाया। इसी समय साहबसिंह जी आपके साथ ज़िला जालन्धर और मालवा के दौरों पर निकले। माधी मुक्तसर पर आकर साहबसिंह ने जाकर देख लिया कि सतूगुरु जी के दर्-ानों और वचनों में ऐसा आकर्शण है कि हज़ारों लोग मन्त्रमुग्ध हो जाते है। दु-चरित्र लोगों को ठीक करने में भी उनकी यह आंतरिक :ाक्ति काम करती। यह भी अनुभव किया गया कि गोरों की सरकार के अतिरिक्त एक अन्य सरकार का भी एक महत्वपूर्ण अस्तित्व है और साहबसिंह जी ने गुरुओं के पढ़े इतिहास को भी गुरु रामसिंह जी तथा सिक्खोंम के सम्बन्ध में जीते देखा।

1862 ई. में प्रचार की दौरे के समय श्री सतूगुरु जी साहबसिंह जी की योग्यता को समझते हुए भैणी साहब का इंचार्ज बना गये। यहाँ ऐसा व्यक्ति चाहिए था जो गुरु रामसिंह जी के आद-ार्ों

का प्रचार-प्रसार भी करता रहे और लंगर का प्रबन्ध भी जारी रखें। अतिथि स्वागत तथा डेरे के प-ु धन की भी निगरानी करता रहे। गुरु हरिसिंह (सत्गुरु जी के छोटे भाई) जो उस समय बुद्धसिंह नाम से घर की खेती-बाड़ी का कार्य करते थे, उनका डेरे से कोई संबंध नहीं था। संकेत रूप में अधैकुंभी के मेले पर सत्गुरु जी बुद्धसिंह जी को बड़ी जिम्मेदारियों के योग्य जतला रहे थे पर अभी जैसे उसका समय नही आया था।

एक उचित तथा योग्य व्यक्ति को भैणी साहब के डेरे का सारा प्रबन्ध सौंप कर सत्गुरु रामसिंह जी ज़िला जालन्धर, ज़िला अमृतसर, वजीराबाद के प्रदे-ों में दर्-ान देते, दो समयस दीवान सजाते, नामधारी समाज में नये-नये लोगों को :ाामिल करते, सियसाकोट ज़िले की ओर चले गये। गुरु रामसिंह जी के दर्-ानों, वचनों, दीवानों का ऐसा प्रभाव पड़ता कि बेझिझक लोग अफ़ीम, भंग, पोस्तख :राब तथा मांस का त्याग कर, हुक्के तम्बाकू को छोड़कर सात्विक जीवन जीवन को तैयार हो गये।

इस लंबे दौरे पर निकले सत्गुरु जी का अगला वर्श भी :ुरू हो गया। सियालकोट की पुलिस ने ज़िले के डिप्टी-कमि-नर को इन दौरों के विशय में अपनी रिपोर्ट दी। इसके आधार पर डिप्टी कमि-नर सयाल कोट ने अपनी 5 अप्रैल 1863 की रिपोर्ट में लिखा : 'जिला लुधियाने का एक बड़ी आयु का सिक्ख अपने 200 साथियों समेत इस जिले का दौरा कर रहा है। रात को यह बंदूकों की जगह लाठियाँ लेकर परेड भी करते हैं। उसके (यहाँ) पांच हजार अनुयायी हैं। वह किसी हाकिम का हुकम नहीं मानता। वह अपने जत्थे समेत जिसमें स्त्रियाँ भी :ाामिल है, अमृतसर वै-ााखी के मेले पर जा रहा है।'

(नामधारी इतिहास, भाग पहला, स. नाहरसिंह एम.ए.)

वै-ााखी पर अमृतसर में काफ़ी में लोग एकत्रित हो गये। यहाँ पर नई योजनाओं के अनुसार और भी सामाजिक सुधार करने का प्रोग्राम बन गया। यह था विवाह को आनन्दकारज का रूप देकर गुरुवाणी द्वारा लावां (फेरे) पढ़कर सम्पूर्ण करना तथा दहेज रहित विवाह करना। इससे अनपढ़ ब्राह्मणों के पांखडी से समाज को मुक्त करना था। दिन नि-चित करके ग्राम खोटे में छः आनन्दकारज करने का निर्णय हो गया। इस वै-ााखी तक नामधारियों के विशय में अँग्रेंज :ाासकों को कुछ संदेह होने लगा।

3 जून, 1863 को गाँव खोटे जिला फिरोजपुर में बाबा समुन्द्रसिंह की अध्यक्षता में विवाह मेला रचा गया। इस दिन के प-चात् पहली बार वह मर्यादा स्थापित हुई जिस आज 'आनन्दकारज' की संज्ञा दी गई है इससे पहले सभी सिक्खों तथा सिक्ख सत्गुरुओं के विवाह वैदिक-रीति से ही सम्पन्न होते थे।

कूका अथवा नामधारियों के यह 'आनन्द कारज' सत्गुरुजी की उपस्थिति में हवन यज्ञ करके वेदी के गिर्द चार फेरे गुरुवाणी में से पढ़कर सम्पन्न किये गये। इससे अपनी रोजी को ठेस पहुँचते देख पहले तो ब्राह्मणों ने इस प्रथा को यहीं रोकने के लिए लड़ाई झगड़े करने की कोि-ा की, फिर बाधा पुराने के थाने जाकर एक ज़ोरदार िकायत की तथा अँग्रेज सरकार को खटकने वाली बातेंम लिखवाकर ऐसे हालात बना दिये कि सुपरिन्टेडेंट पुलिस को मौके पर खोटे आना पड़ा। बातचीत के दौरान जब एस. पी. को नामधारियों की ओर से जवाब मिला कि वे इस मामले में किसी का अनुचित हस्तक्षेप नहीं चाहते। वे अपने समाज में विवाह, :ादियों, मरने-धरने के रीति-रिवाजों को सरल ढंग से करने में पूर्ण स्वतंत्रता चाहते है। इसकी रिपोर्ट गवर्नर पंजाब तक पहुँची।

काफ़ी हलचल मच गयी। पंजाब सरकार की आज्ञानुसार डिप्टी कमि-नर फौरन खोटे ग्राम में पहुँचा। उसने आते ही पंजाब सरकार का आदे-ा सुनाया-

(क) जिला फिरोजपुर में कोई धार्मिक मेला या कोई सामाजिक कार्यक्रम सामूहिक रूप में ना करें।

(ख) गुरु रामसिंह जी फौरन यहाँ से चलकर भैणी साहब पहुँच जायें।

14 जून तक सत्गुरु जी पुलिस की देख-रेख में भैणी साहब पहुँच गये और इसके प-चात् नामधारियों के केन्द्र को संदेहात्मक दृश्टि से देखा जाने लगा। पुलिस सारे पंजाब के नामधारियों पर कड़ी निगरानी रखने लगी।

पहली रिपोर्ट

साहबसिंह जी के नाम से संबंधित पहली रिपोर्ट जालन्धर के मैजिस्ट्रेट कप्तान मिलर को उसके किसी चापलूस के द्वारा मिली। 11 जून को डिप्टी कमि-नर जालन्धर और पुलिस के सुपरिन्टेंडेंट को उसने बताया-''मैंने गंडासिंह (जासूस) को गुरु रामसिंह के गाँव भेजा था। गुरु वहाँ

अनुपस्थित थे। उनका चेला साहबसिंह वहीं मौजूद था। गंडासिंह ने नामधारी बनने की इच्छा प्रकट की। रात को गंडासिंह उनकी टोली में जा मिला। उस टोली में 50 के लगभग व्यक्ति थे। ढोलक बजी और हर एक ने अपनी-अपनी लाठी साहबसिंह सेले ली। साहबसिंह ने टोली को दो घंटे परेड करवाई।'

(नामधारी इतिहास पहला भाग स. नाहरसिंह एम.ए. पृश्ठ 172)

दूसरी रिपोर्ट

डिप्टी-कमि-नर तथा एस.पी. ने मिलर के द्वारा दी गयी गंडासिंह की रिपोर्ट पर वि-वास न करके हकीकत की ओर अधिक पूछताछ करने के लिए चार और जासूस जो ऊँची पदवी के थे, भैणी साहब भेजे। इनके नाम बड़ी सावधानी से सरकारी काग़जों में भी नहीं दिये गये। अब तक गुरु रामसिंह जी खोटे गाँव से नयी पाबन्दियों को लेकर भैणीसाहब आ चुके थे।

नयी जाँचय के अनुसार 'नामधारियों का रवैया अमन-अमान वाला था। भैणी साहब में उन्होंने कोई परेड होते नहीं देखी और न ही उनके पास कोई हथियार थे।

(नामधारी इतिहास भाग पहला स. नाहरसिंह एम.ए.)

1863 अप्रैल से जून तक पंजाब के सब ज़िलों से मिलौ रिपोर्ट के आधार पर इंसपेक्टर जनरल पुलिस ने एक रिपोर्ट तैयार की जिस पर आगे पंजाब सरकार के सैक्रेटरी टी.डी. फोरसिथ ने 12 मुधों का एक नोट लिखा। इसका भाव यह था कि गुरु रामसिंह जी की -िक्षाएँ राजविद्रोही नहीं, वह समाज सुधारक है। धार्मिक कुरीतियों को दूर करते हैं। पर गुरु रामसिंह जी के कुछ चेले राजद्रोही बातें करते हैं। चाहे गुरु रामसिंह जी का उद्दे-य जो हो, पर, उसकी -िक्षाओं से लोगों के मन डावाँडोल हो गये हैं। गुरु रामसिंह को उसके उसके गाँव में ही नज़रबन्द कर दिया जाये।

सूबे की पदवी

आगामी वर्श नामधारियों के लिए सख्त पाबन्दियों के थे। नामधारी समाज को कायम रखना, एक कठिन काम था। सत्गुरु रामसिंह जी ने अपनी नज़रबन्दी के समय में पहले अपने एक फ़ौजी साथी तथा अब सक वि-वासपात्र सेवक बाबा काहनसिंह चक वाले, बाबा :ुद्धसिंह मढौर और बाबा

जवाहरसिंह को सूबे बनाकर, इलाके बाँटकर प्रचार जारी रखा। फिर साहब सिंह तथा लखा सिंह को सूबा बनाकर बाहर भेजा। अन्त में एक ओर टीम सूबों के तौर पर बना दी। अर्थात् पंजाब राज को बाइस क्षेत्रों में बाँटकर अपने संदे-ा घर-घर पहुँचाने का प्रबन्ध कर दिया।

चाहे साहबसिंह की योग्यता का लोहा पहले ही नामधारी समाज में माना जाता था, अब तो सारे पंजाब में सूबा साहबसिंह की चर्चा होने लगी थी। सरकारी अधिकारी भी इसकी योग्यता तथा चतुराई को समझने लगे थे।

तीसरी रिपोर्ट

1866 ई. में गंडासिंह ने पुनः मुखबरी की जिसके अनुसार, कूके गड़बड़ के लिए तैयार है . ...गुरु रामसिंह जी के बाद सूबा साहबसिंह उनकी जगह होगा ...यदि साहबसिंह अगुआ बन गया तो अव-य ही दंगा हो जायेगा।

(ना. इतिहास भाग पहला स. नाहर सिंह ए. ए. पृश्ठ 186)

इस प्रकार सरकारी काग़जों में पहली बार गुरु रामसिंह जी के सम्भावित उत्तराधिकारी की खबर दी गई।

अवज्ञा

सूबा साहबसिंह तथा अन्य वि-ोश सूबों ने इतना :ाान्तिपूर्वक तथा रहस्यमय ढंग से काम किया कि पंजाब के गर्वनर के प्रान्त में :ाान्ति समझकर 1866 के अन्त में पाबन्दियाँ नर्म कर दी। आज्ञा लेकर गुरुद्वारों की यात्राओं की छूट दे दी गई। तो भी जब जनवरी 1867 के माघी का मेला मुक्तसर में करने के लिए ज़िला अधिकारी से आज्ञा माँगी गयी तो साफ़ मना कर दिया गया।

सत्गुरुजी अतः सूबों ने निर्णय किया कि यदि माघी पर नहीं जाने दे रहे है तो यह दिन धूमधाम से भैणी साहब में ही मनाया जाये। जब इसके विशय में सरकार को सूचित किया गया तो एस.पी. लुधियाना तो बिना दखल मेला होने देने के लिए मान गया, पर इंसपेक्टर जनरल ने :ार्त रखी कि मेला तो हो सकता है यदि कम आदमी एकत्रित हों। जब सत्गुरु जी को सरकार का यह फ़ैसला बताया गया तो उन्होंने तथा उनके सूबों ने यह पाबन्दी मानने से इंकार कर दिया और बड़ी

धूमधाम से माघी का मेला भैणीसाहब में ही किया।

होला आनन्दपुर

1867 मार्च में आनन्दपुर जाकर होला देखने के लिए आज्ञा माँगी। पंजाब के लाट साहब ने संबंधित अधिकारियों को समेत करके आज्ञा दे दी। पुलिस के सख्त प्रबन्ध में होला ठीक प्रकार निकट गया। सरकारी रिपोर्ट के अनुसार सबसे आगे गुरु रामसिंह जी घोड़ी पर, पीछे बाइस सूबों का जत्था घोड़ों पर सवार होकर तख्त श्री केसगढ़ के दर्-निों को चल पड़ा। इनके पीछे 2500 नामधारी पैदल सफ़ेद कपड़े पहने :ाब्द कीर्तन करते चले जा रहे थे। सूबा सुद्धसिंह मढ़ीरिया इस जुलूस का मुख्य प्रबन्ध था। इस सुन्दर वृहत् जुलूस को डिप्टी-इंसपेक्टर जनरल ने स्वयं देखा।

आनन्दपुर होले पर नामधारियों के आगमन की खबर सुनकर पुजारी बौखला उठे। उन्होंने पंजाब सरकार को दंगा होने की संभावना की ि-कायत की, तो पंजाब के अनुभवी डिप्टी-इंसपेक्टर जनरल सब कुछ ठीक रखने के लिए कुछ वरिश्ठ अधिकारियों के आधीन काफी पुलिस भेज दी। हो-ियारपुर का ए.एस.पी.मि. हेचल, डिप्टी-कमि-नर मित्र परकिन्ज आदि भी उचित प्रबन्ध के लिए आ गये। नामधारियों को पाबन्दियाँ सुनाने लगे। गुरु रामसिंह जी तथा सूबों ने रोश प्रकट किया-हमें :ान्तिपूर्वक होला क्यों नहीं देखने दिया जाता।

विरोध ने निहंगों का एक दल उठा, पर पुलिस ने कड़े प्रबन्ध के कारण दंगा न हो सका। उत्तेजना के बावूजद भी होला ठीक प्रकार संपन्न हो गया। डिप्टी कमि-नर ने मियाँ फजल हुसेन की ड्यूटी :ान्ति स्थापित करने के लिए लगायी हुई थी। उसने मेले की समाप्ति पर 20 मार्च को एक रिपोट दी। रिपोर्ट दिलचस्प और लंबी है। पर उसके कुछ अं-ा निम्न प्रकार हैंः-

- निहंग, बेदी और सोढ़ी नामधारियों को आनंदपुर गुरुद्वारे के दर्-ान कराने में सहमत नहीं थे।
- तख्त श्री केसगढ़ में पुजारियों ने भेटें तो ले लीं किन्तु कड़ाह प्र-ााद की अरदास करने से इंकार कर दिया। कूकों ने स्वयं ही अरदास करके कड़ाह प्र-ााद बाँट दिया।
- डेरे में आकर गुरु रामसिंह जी ने पुजारियों को एक पत्र लिखा कि तुम गुरुसिक्खी के विरुद्ध सारी कुरीतियाँ करते हो। हम गुरुवाणी के अनुसार चलते है। फिर तुम हमारी अरदास क्यों नहीं करते?
- गुरु रामसिंह तथा सूबों के पास 40 घोड़े थे। होले में 8000 कूके :ामिल हुए।

- इसके अतिरिक्त सब सूबे मौके पर पहुँचे हुए थे। गुरु रामसिंह जी तो अँग्रेंज सरकार के विरुद्ध कोई काम नहीं करते पर उनके कई सूबे जरूर बुरे हैं।
- कूकों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है, अम्बाला, लुधियाना, फिरोजपुर के ज़िलों और नाभा पटियाला की रियासतों में कूके-काफी संख्या में है। होनियारपुर जालन्धर, अमृतसर, लाहौर, सियालकोट और गुरुदासपुर आदि ज़िलों में भी कूके क़ाफी हैं।

वास्तव में सूबा साहबसिंह तथा दूसरे सूबों की धार्मिक और राजनीतिक धारणा वही है जो गुरु रामसिंह जी की है। यह सूब वह स्तम्भ थे जिन पर स्थित मंच पर विराजमान गुरु रामसिंह जी संपूर्ण दे-ा में उजागर थे।

दर्खास्त

अभी आनन्दपुर के होले में गुरु रामसिंह जी तथा सूबों के संबंध में विचार पंजाब सरकार के ध्यान में कौंध रहे थे कि इसी वर्श 26-27 अक्तूबर को आने वाली दीवाली पर अमृतसर जाने के लिए दर्खास्त लेकर सूबा साहबसिंह और सूबा काहनसिंह लाहौर पहुँच गये। बाबा सन्तोखसिंह सतुगुरु विलास में लिखते है : जाकर प्रार्थना की कि दीप माला की छुट्टी माँगते हैं। फिरंगी बोले कि छुी नहीं मिलेगी। सिक्खों ने कहा कि सन्यासी लोग हैं, किसी का अहित नहीं करते। फिरंगी ने कहा : तुम संन्यासी नहीं हो। कड़ाह प्र-ााद छकते हो। सुर्खी तुम्हारे चेहरों पर झलकती है। संन्यासी का-सा तुम्हारा कोई वे-ा नहीं है। तुम्हारा तौर-तरीका बाद-ााहों वाला है। हम तुम्हें आज़ादी देकर अपने राज से हाथ धो बैठें। जाओ छुी नहीं मिलेगी।

लुधियाना का एक फिरंगी था, उससे कहा कि हमें छुी दो। उसने उत्तर दिया कि सब कुछ लाट के अधिकार में है। सूबों ने गुरू रामसिंह जी से आकर कहा : 'जी लाट छुी नहीं देता।' श्री सतुगुरू जी ने रोश में कहा : 'चलो खालसा जी अमृतसर को, हम भी आये।' .....अन्त में कप्तान साहब ने रामदास (भैणी साहब) में आकर छुट्टी दे दी। दीपमाला देखने की।'

द-ाहरा

राजनीतिक क्षेत्र में कहीं हलचल नहीं थी। नामधारियों की गतिविधियाँ मिश्रित सा प्रभाव देती

थीं। पूर्ण–रूपेण कहा नहीं जा सकता था कि यह सब कुछ राजनीतिक है या अराजनीतिक। सो पुलिस हर प्रकार से सावधान थी।

गुरू रामसिंह जी की दीपमाला देखने को जाने की तैयारी सुनकर द-ाहरे के दिनों में कप्तान मैनज़ीस एस.पी. अमृतसर ने एक जासूस भैणी साहब भेजा। उसने आकर सूचित किया कि द-ाहरे के अवसर पर लगभग 3000 नामधारी भैणी साहब एकत्रित हुए थे। सूबे भी उपस्थित थे। 15000 नामधारी अमृतसर पहुँचेंगे।

सरकार को आ-चर्य था कि बिना उसकी डाक तार की सहायता लिए जब आव-यकता पड़ें, तभी कूके हजारों की संख्या में किस प्रकार एकत्रित हो जाते हैं।

दीवाली

दीवाली के अवसर पर सारा गुरू परिवार और सीाी सूबे साहबान अमृतसर पहुँचे। 27 अक्तूबर 1867 को गुरू रामसिंह जी, सूबे तथा कुछ अन्य प्रमुख नामधारी दरबार साहब मत्था टेकने गये। अन्य स्थानों पर भी भेंटें रखीं। पर जब अकाल तख्त आये ंतो आनन्दपुर वाली बात हो गयी। पुजारी ने अरदास करने से मना कर दिया। सूबा साहबसिंह जी ने पहले ही विनय की थी। सत्गुरू विलास में बाबा सन्तोखसिंह ने वर्णन किया है : ''गुरू सर्वज्ञ है। क्या करना है जाकर, यहाँ ही मथा टेक लो। अगर जाओं तो हमें तनखहीये (दंडनीय) कहते है। ऐसा कहते इन्हें :ार्म नहीं आती। हम नित्य नियम करते हैं तो भी यह हमें तनखाहीय कहते हैं।''

साहबसिंह जी के यह :ाब्द उनके मन की द-ाा को स्पश्ट करते है। अरदास तो सत्गुरू जी ने किसी नामधारी से करवा ली और कड़ाह प्र-ााद भी बाँट दिया, पर यह स्पश्ट हो गया कि सब तख्तों पर, सब तीर्थस्थानों पर अंग्रेजों के चापलूस बैठे हुए है। यह सिक्खी की सच्चाई पहचानने की अपेक्षा तिजोरियों पर क़ब्जा रखने के लिए लड़ाई–झगड़े तथा अँग्रेजी सरकार की ओट लेते हैं।

नर्मी तथा गर्मी

सत्गुरू रामसिंह तथा सूबे नामधारियों का नेतृत्व बड़ी नाजुक द-ाा में कर रहे थे। पंजाब में जाट, बढ़ई, लुहार, नाईं, दरजी, कुम्हार कम्बो आदि भारी संख्या में नामधारी बन रहे थे। वह वर्ग

भी जिसे अछूत समझा जाता है चौथी पौड़ी के नाम के अन्तर्गत सिंह सजकर जीवन की व्यर्थ की ऊहापोह में से निकल कर ऊँचे चरित्र की ओर बढ़ रहा था। यह लोग खालसा राज की आ-ाा से विभोर हो रहे थे क्योंकि अँग्रेजी सरकार ने हर एक वर्ग पर ही कुछ न कुछ टैक्स लगाकर विदे-ाी :ाासन होने का अहसास करवा दिया था।

दूसरी ओर अँग्रेज अधिकारी तथा उनके वि-ोश कार्यकर्ता गुरू रामसिंह जी की धर्म :ाक्ति से खीझें हुए किसी भी बहाने इनको फैलने तथा बढ़ने से रोकने की योजना बना रहे थे।

इस समय सामाजिक जीवन में साहबसिंह जी के साथ कई नर्म-गर्म घटनाएँ घटीं। मानवीय जीवन में कितने उतार-चढ़ाव आते हैं, उनकी झलक भी दिखाई देती है। सन्तोखसिंह जी की अप्रका-ित विस्तृत रचना में से बिखरे हुए :ाब्द-कण एकत्रित करके उनकी कुछ झलकियाँ यहाँ दे रहे हैं।

सूबा साहब सिंह समय-समय पर तरह-तरह के विशयों पर विचार-विमर्-ा करते रहते थे। एक दिन उन्होंने सतूगुरू जी को पूछा ''यदि आपका सिख होकर कहे कि उसे सिक्खी से वंचित कर दिया जाये तो उसके लिए क्या वचन है?''

गुरू जी ने वचन किया। ''सात जन्म तक पीछे सिख नहीं हुआ, और चौदह जन्म तक भविश्य में सिख नहीं होगा। इक्कीस जन्म की ताड़ना उसके लिए क्या वचन है?''

गुरू जी ने वचन किया : ''सात जन्म तक पीछे सिख नहीं हुआ, और चौदह जन्म तक भविश्य में सिख नहीं होगा। इक्कीस जन्म की ताड़ना उसके लिए है।''

''जो आपकी मर्यादा में पूरा हो तथा पाँच ऐब करता हो तो?'' सतूगुरू जी ने फर्माया : '' यह जो चार अक्षर भजन है जो जपेगा उसकी चौरासी तो कट ही जाती है। साथ ही जब भी मिलेगा, मनुश्य जन्म ही मिलेगा। एक जन्म बुरे कर्म करेगा तो दूसरे जन्म में सुधर जायेगा।''

एक समय सतूगुरू जो एकान्त में भजन कर रहे थे, सूबा साहबसिंह उन्हें लस्सी पिलाने के लिए उनके समीप गया। गुरु जी ने वचन किया : ''तुझे रंग दिखाऊँ?'' बाबा साहब सिंह बोले : ''आपकी जैसी इच्छा हो।'' इतना कहने पर गुरु जी ने चरण धरती पर तथा सिर आका-ा पर

टिकाकर विराट रूप द-र्ाया।

बाबा साहब सिंह इस विराट रूप को निहारकर आ-चर्यजनक रह गये। फिर अपने :ारीर में पहले सरीखे लघु रूप में आकर सत्गुरू जी ने वचन किया : ''साहब सिंह जो कोई इस रूप का द-र्न कर लेगा, उसको सारी उम्र के भजन का फल प्राप्त होगा।

(अमृतसर दीपमाला) बड़ा मेला किया। बहुत लोगों ने भजन लिया। जब घोड़ी पर सवार होने लगे तो सूबा साहबसिंह की घोड़ी की दुलत्ती लगी। श्री सतगुरू जी दुलत्ती लगने से कलेजा दबाकर बैठ गये। क्षण मात्र में ठीक हो गये। चीनी घोड़ी पर सवार होकर चल दिये।'

वरना ग्राम में एक रागी दोतारा बजाता था। उसने सत्गुरू जी के समक्ष :ाब्द पड़ा। कमजोर सा था। गुरू जी ने आज्ञा दी :- ''साहबसिंह, इसकी दो रूपये दो।'' साहब सिंह ने कहा : ''चवन्नी अठन्नी देने के योग्य है।'' गुरू जी के कंधों पर प-ामीने की चादर थी, सो उतार कर उसे दे दी। उसका मूल्य इक्कीस रूपये था।

सत्गुरू जी के पास कई बार ऐसे खजांची आ जाते थे जो समय पाकर ऐसे बन जाते थे जो कि सत्गुरू जी की उदारता न समझ कर अपनी सोच-समझ की अधिक उचित मानते थे। यह वे लोग होते है 'दात प्यारी विसरिया दातारा।'

एक दिन बाबा जसासिंह जी (सत्गुरू रामसिंह जी के पिता) ने कहा : ''बाबा साहबसिंह मुझे वर दिलवा दो। तुम सच्चे पात-ाह की देह हो।'' पास ही बाबा काहनसिंह ने भी कहा : ''मुझे भी वर ले दो। सूबा ब्रह्मासिंह ने भी यह बात कही। बाबा साहबसिंह ने उŸार दिया : 'सत् वचन, जिस समय खु-ाी में साहब आयेंगे, ले दूँगा। कुछ दिन प-चात् अन्तर्यामी ने कहा : ''उन्हें ले आओ जो तुम्हें वर दिलवाने को कहते थे।''

मानावाला जिला :ोखपुरा में स. हीरासिंह ने होले का मेला करवाया। कुल जिलों में नामधारी हजारों की संख्या में होले में आये। उन दिनों यातायात के साधन तो उपलब्ध नहीं थे। सो कई दिन पहले ही लोग जत्थे बनाकर चल दिया करते थे। अन्तिम दिन सरदार ने सतिगुरु जी के सम्मान में सुनहरी साज सामान से सुसज्जित लम्बी घोड़ी 101 रु. नकद, 500 रु के मोल का चोगा तथा एक कीमती

जोड़ा चरणों के लिए भेंट करके माथा टेका।

बाबा सन्तोशसिंह के :ाब्दों में : ''एक चोगा 500 रू. की कीमत वाला भेंट किया। श्री सत्गुरु जी ने बाबा साहबसिंह को दे दिया। साहबसिंह जी का यह मान कोई साधारण नहीं था। सत्गुरु जी की ओर से यह प्यार सम्मान देखकर उनके पास खड़ा एक अन्य युवक सूबा ज्ञानी रतनसिंह बोल पड़ा : ''तू मीरजादा हो गया है। टसंघ का उतार से लिया है। साधु पद नहीं रहा।''

सतूगुरू जी ने मनोवंदना समझकर तुरन्त आज्ञा दी : '' तू दित्तू रागी को दे दे।'' साहब सिंह ने यह चोगा झटपट दित्तू रागी को दे दिया।

साहबसिंह जी को न लेते हुए लालच था, न देते समय मोहू। पर ऐसे अवसरों पर विशाद की एक हल्की-सी रेखा का खिंच जाना तो मानवीय स्वभाव ही है। परन्तु सतूगुरू रामसिंह जी की मानसिक निकटता बड़े-से-बड़े विशाद को टिकने नहीं देती थीं दूसरे क्षण में ही मन पर आई क्षोभ की छाया दूर हो जाती।

सूबा साहबसिंह जी के बड़े भाई जो इनसे पाँच वर्श बड़े थे, भाई रूढ़ासिंह जी भी 1860 ई. के आस-पास गुरु चरणों में आ गये तथा जब सूबों की स्थापना की गई तब इनके गुणों का भी मूल्यांकन हो गया। रूढ़ासिंह जी भी सूबे बनाये गये। इस प्रकार भाई दयालसिंह जी के दोनों सुपुत्र उन आन्दोलन में उच्च पदवी पर आ गये जिनके द्वारा आगे बढ़ने की वि-ोश सम्भावनाएँ थीं।

नेपाल की ओर मि-ान

पंजाब की अँग्रेंज सरकार की कड़ी निगरानी के बाबजूद भी सूबों के द्वारा जम्मू क-मीर तक नामधारी गतिविधियों की पहुँच हो गयी। क-मीर में एक कूका रेजिमेंट की :ाक्ति पनपने लगी। दूसरी ओर नेपाल में भी कूकों का हाथ पड़ गया। नेपाल में गये कूकों ने गुरु रामसिंह जी के आन्दोलन की ऐसी आकर्शक तसवीर पे-ा की कि महाराजा जंगबहादुर को गुरु रामसिंह जी की निकटता में दिलचस्पी हो गयी। वास्तव में क-मीर और नेपाली राज अँग्रेज की पसन्द नहीं करते थे। पर सामने आकर विरोधता भी नहीं कर सकते थे। इसलिए जब तक बात उघड़कर सामने नहीं आ जाती, तब तक अँग्रेज विरोधियों को उत्साहित किया जा सकता है।

पंजाब में गये हुए एक नामधारी कि-ानसिंह उर्फ हरिसिंह जिसके पंजाब सरकार ने वारंट निकाल रखे थे, नेपाल सरकार ने पंजाब सरकार को उसे सौंपने में इंकार कर दिया। वह खुद अंग्रेंज सरकार को अपना मित्र नहीं समझता था। जब सत्गुरू रामसिंह जी के महान लक्ष्य का पता लगा तो महाराजा नेपाल ने उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की।

सत्गुरु बिलास के अनुसार, : 'राजा ने सिखों से पूछा, उस दे-ा में कौन-सा प-ाु अच्छा होता है?''

सिखों ने कहा : 'जी, भैंस सबसे अच्छा प-ाु है। राजा ने दो भैंसे मँगवाने को कहा। सिखों ने रामदासपुरु सत्गुरु जी को लिखा : '' राजा भैंसे माँगता है।'' और इतनी बात गहरे सम्पर्क का कारण बन गयी।

इस अवसर पर सत्गुरु जी ने सूखा साहबसिंह जी को अपने राजदूत के तौर पर नेपाल जाने का सम्मान दिया। साहबसिंह जी के साथ दूसरे सूवा काहन सिंह जी भेजे। श्री अतरसिंह, जीवनसिंह आदि चार और व्यक्तियों को भैंसें तथा दो खच्चरों के तोहफे देकर भेजा। यह भेटें महाराजा तथा टिक्के के लिए थीं।

नेपाल दरबार के नियमानुसार कृपालसिंह ने सूबों के पहुँचते ही उनकी मुलाकात जंगबहादुर के पुत्र हजूरी जनरल टिक्का बब्बर जंग से करवाई। टिक्का बब्बर जंग ने इन्हें अपने पिता महाराजा जंगबहादुर के सामने पे-ा किया। तोहफों में बदले में गुरु रामसिंह जी के लिए महाराजा की ओर से 500 रु. नकद, एक कस्तूरी और सोने की माला, एक दु-ााला, एक तिब्बती घोड़ा तथा दो सुखरियाँ तोहफों के तौर पर भेजीं गई।

(नामधारी इतिहास भाग पहला पृश्ठ 267, 268)

यह तोहफों का आदान-प्रदान उस आन्तरिक समझौते का प्रतीक था जिसका लक्ष्य अव-यमेव अँग्रेज सरकार के विरूद्ध थी। अँग्रेजों को कूकों के विशय में ऐसा संदेह तो था किन्तु 1871 ई. तक के इसके बारे में स्पश्ट नहीं थे। बाद में अँग्रेंज रेजीमेंट ने अपनी रिपोर्ट में लिखा : ''जंगबहादुर ने कूकों की बगावत के समय अँग्रेजों को हर प्रकार की सहायता देने की पे-ाक-ा दी।''

गाय की समस्या

अँग्रेजों ने पंजाब पर क़ब्जा करते ही एक ऐसा रवैया अपनाया जिससे मुधतों से नाखुन और माँस की तरह एक साथ रह रही संप्रदाएँ तनातनी की ओर बढ़ने लगीं। अँग्रेंज फूट डालने तथा राज करने के नियम का समर्थक था। पंजाब के लोगों ने गायों का काटना, माँस खरीदना तथा बेचना अभी तक नहीं देखा था। गवर्नर जनरल ने 20 मई 1849 के एक विज्ञापन ने इस ओर मुसलमानों को प्रेरित कर लिया और धीरे-धीरे यह हिन्दू मुस्लिम झगड़े का एक बड़ा कारण बन गया। पंजाब के हिन्दू सिक्खों का धार्मिक केन्द्र अमृतसर कई बार साम्प्रदायिक झगड़ों की लपेट में आया पर कानून मुसलमानों के पक्ष में था। वे लोग जो भाई-भाई की तरह रहते आ रहे थे, गऊ माँस के प्र-न पर दो विरोधी दलों में बदल गये। ऐसे वातावरण में अंग्रेजों की प्रेरणा उन्हें प्राप्त होती रहती। डठाई-गीर, टुकड़खोर तथा ऊँचे पदों पर आरूढ़ हिन्दू-सिक्ख आँखें बन्द किये रहते, पर मध्यम वर्ग तथा पिछ्ड़े वर्ग के लिए यह मान-मर्यादा का प्र-न था।

अमृतसर के आठ नामधारियों ने इस प्र-न को अपनाया। उन्होंने जान लिया कि अँग्रेंज पंजाब के हिन्दू सिक्खों को निर्बल तथा हीन समझता है और मुसलमान गोरों की प्रेरणा के बल पर बौराये फिर रहे हैं। उन्हीं दिनों घंटाघर के पास जो दरबार साहब के निकट है, हलाली गऊ माँस खुलेआम बिकता था। नामधारियों ने अपने नेताओं के परामर्-ा लिए बिन ही 14 जून, 1871 की रात को अमृतसर बूचड़खाने पर हमला कर दिया।

चार बूचड़ उसी जगह मार दिये। तीन को अधमरा छोड़कर गऊओं के रस्से खोलकर चम्पत हो गये। व्याख्या न करके केवल इतना बताना ही काफी है कि इन कातिलों का सरकार को अभी पता भी नहीं लगा था कि 15 जुलाई की रात को अर्थात् पूरे एक मास बाद जिला लुधियाने के कस्बे रायकोट के बूचड़खाने पर कुछ नामधारी टूट पड़े। उन्होंने चार बूचड़ों को जान से मार दिया तथा सात को घायल कर छोड़ गये।

जब अंग्रेजों का तख्ता डोलना स्वाभाविक था। हर तरह की भाग-दौड़ करके बूचड़खाने के हमलावर कूके पकड़े गये। जल्दी-जल्दी झूठी-सच्ची गवाहियाँ तैयार करके नौ दिनों के अन्दर-अन्दर

मुकधमे की कार्यवाही खींच घसीटकर 5 अगस्त, 1871 को रायकोट बूचड़खाने के पास तीन कूकों को सुबह दो सौ आदमियों के सामने फाँसी दे दी गयी।

अमृतसर में हुए बूचड़-वध के विशय में पुलिस अफ़सर किस्टी ने कितने ही निर्दोशों को पीट-पीठ कर विश्टा की धूनियाँ दे-देकर कत्ल मनवा लिये। अत्याचार सहते हुए उन्होंने सबूत भी जुटा लिए। पर नामधारियों के निर्दोशों से मनाये गये कत्लों की समस्या को ध्यान में रखा तथा अँग्रेजों की सच्ची अदालत का झंडा इस प्रकार चौराहे पर फोड़ा जब कि वास्तविक कातिलों ने अपने आपको पे-ा कर दिया। इनमें से चारों को 15 सितम्बर, 1871 ई. की पहलों से एक दिन बाद ही रामबाग अमृतसर के एक बड़े-से बढ़ के पेड़ से बांधकर फाँसी पर लटका दिया। दो को काले पानी की सजा दी गयी। एक अन्य व्यक्ति को भी फाँसी पर लटका दिया गया।

भयभीत सरकार अपराधियों के मिलते ही जल्दी से उन्हें सजाएँ दे देती। जिससे लोगों पर इनके कठोर दण्ड का आतंक छा जाये। रायकोट के बूचड़-वध के मामले में दो अन्य निर्दोश कूकों को 26 नवम्बर, 1871 में फाँसीं पर लटका दिया। उनमें से एक नामधारी सूबा रतनसिंह उर्फ़ ज्ञानीसिंह भी था जिसका किसी प्रकार के बूचड़-वध से संबंध नहीं था।

उग्रवादी

विदे-ी सरकार को कुछ अनहोनी घटित होने की एक वौखलाहट थी। वह संभव तैयारी करके, लोकमत को अपनी इच्छानुसार ढालकर कूकों की तत्काल सजाएँ देकर अपनी ओर से आन्दोलन को दवा रही थी। गुरु रामसिंह जी और उनके सूबे बहुत चिन्तित थे कि बूचड़-वध की इन घटनाओं से चाहे बहुसंख्या में लोगों की मानसिक तसल्ली हो गयी थी तथा आज भी बरकरार रह गयी थी, पर यह जल्दबाजी दूरदृश्टि से आन्दोलन को डुला सकती थी। सबसे अच्छी बात यह थी कि फाँसी पर चढ़ने वाले सभी :ाहीद हौंसले में रहे और कई तो गोरों को चुनौती देकर हँसते फांसी पर चढ़ गये थे कि दोबारा जन्म लेकर वह इनके विरूद्ध लड़ेंगे। इससे साधारण लोगों को बहुत बल मिला वे इनको अपना हीरो समझने लगे।

नामधारियों में मस्तानों का एक ऐसा ग्रुप था जो उग्रवाद से प्रभावित था। इनमें बलिदान की अद्वितीय भावना तथा दिलेरी थी। उनके हर काम में उतावलापन तथा अंधा ज़ो-ा था। इतना अंधा

कि बिना सोचे-विचारे वह निर्दोश सूबा ज्ञानीसिंह की मौत का बदला लेने के लिए मरने-मारने पर तुल गये। वे यह भूल ही गये कि किसी मनोरथ को फलीभूत करने के लिए तथा विदे-ी सरकार जैसी :ाक्ति का सामना करने के लिए हमें अपने में भी :ाक्ति एकत्रित करनी है। संसार भर के उग्रवादियों का इतिहास बताता है कि उनका स्वार्थरहित बलिदान देने की भावना समय की नज़ाकत को न पहचानना, आन्दोलन को गलत दि-ाा की ओर ले जा सकता है तथा सदा ही इतनी हानि पहुँचाता है कि आन्दोलन को पुनः उभरने में बरसों पीछे धकेल देता है।

कुछ ऐसा ही नामधारी आन्दोलन के साथ घटित हुआ। सरदार हीरासिंह सकरौदी और लहनसिंह का मस्ताना जत्था, जिसे :ाहीदी जत्था भी कहा जाता था, भैणी साहब माघी (जनवरी 1872, के मेले पर आया हुआ था। इस अवसर पर सभी नामधारी कूकों के फाँसी पर चढ़ने तथा सजाएँ भुगतने के बड़े जो-ाीले गीत गाते थे। अँग्रेज सरकार के विरुद्ध लोगों में एक मर-मिटने की भावना भड़काने के लिए वे :ाहीद हुए थे। विद्रोह तथा नफ़रत की गरिमा तो हर ओर थी, जब ज़रा सी फूँक मारने भर की जरूरत थी.... कि आग लग जाये।

और यह काम भी स्वाभाविक हो गया। गाँव फरवाही, रियासत मलेरकौटले के नामधारी नम्बरदार गुरुमुखसिंह ने एक निर्दयी मुसलमान की एक बूढ़े बैल के साथ की गई ज्यादती की कहानी मार्मिक :ाब्दों में सुना दी। जिसको अन्त में काजी के हुक्म से उसके सामने गोद-गोदकर मार दिया था। अतः इस कहानी ने आग पर तेल डालने का काम किया। माघी के मेले पर आये लोग 13 जनवरी :ााम तक वापिस हो गये। पर सौ आदमियों का एक :ाहीदी जत्था तो मलेरकोटले जाकर :ाी-ा देने को तैयार हो गया।

एक बार किसी मस्ताने को सूबा साहबसिंह ने कोड़ा मार दिया था। सत्गुरू रामसिंह जी ने अपनी पीठ पर से कपड़ा उठाकर वह नि-ाान दिखाये जो मस्ताने की पीठ पर पड़ने थे। सत्गुरू जी इन बलिदानों पर बलिहार जाते थे। एक बार सूबों के कहने पर इनका खाना-दाना बंद कर दिया गया, तब गुरु रामसिंह भी एक ग्रास न खा सके थे। पर यह ज्ञात नहीं था कि आज का यह समूह इतना हठी हो जायेगा।

मस्तानों का इरादा पता चलने पर पहले सूबा लखासिंह जी ने बहुत समझाया। फिर सूबा

साहब सिंह जी ने प्रमाण दे देकर इनके दिमाग में उतारनी चाही पर वह तो आज मरने-मारने पर तुले हुए थे। किये प्रण को वापिस लेना नहीं चाहते थे। अंत में सूबा साहबसिंह जी ने मस्तानों को कहा : ''हीरासिंह तथा लहनासिंह जी, संगत का प्र-ाद तैयार है, ना गँवाओ।'

(सत्गुरू विलास बाबा सन्तोखसिंह)

सूबा साहबसिंह ने कभी ऐसे अपने लिए कड़े :ाब्द नहीं सुने थे। उसकी सत्गुरू जी के बाद सरदारी मानी जाती थी। पर आज मस्तानों ने तो उसके बढ़े हुए पेट का ताना भी मार दिया और 'महन्त' की जगह उसे 'मसन्द' कहकर बिलकुल ही उतार दी थी।

साहबसिंह जी सत्गुरू जी के पास गये। हालात की नज़ाकत, मस्तानों के जो-ा के द्वारा निकलने वाले दुश्परिणाम के विशय में अर्ज की। सत्गुरु महाराज स्वयं आये। उन्होंने हीरासिंह तथा लहनसिंह के समूचे जत्थे को :ांति कायम रखने के लिए कहा। पर मस्तानों के सिर पर तो ज़ो-ा का एक भूत सवार था। उन्होंने अपने सत्गुरू जी को भी एक बात कहकर चुप होने पर विव-ा कर दिया कि हमें गुरु तेगबहादुर धर्म के हित में :ाी-ा कटाने का आदे-ा दे रहे हैं।

सत्गुरु रामसिंह जी के पास अब कोई चारा नहीं था। पलों में ही होनहार की तसवीर उनके मस्तिश्क में कौंध गयी। आपने मौके पर आये हुए पुलिस इंस्पेक्टर साहनेवाल (थाना) को कह दिया : ''मेरे आदमी बेलगाम हो गये हैं। इन्हें संभाल लो। मेरे व-ा की बात नहीं है।''

इंस्पेक्टर सरफराज खाँ ने खुद इस जो-ा को देख लिया था। वह 14 जनवरी की सुबह एक बजे लुधियाना पहुँचा और उसने डिप्टी कमि-नर को सारा वृतान्त सुनाया यानी भंयकर परिणामों से अँग्रेज अफ़सर को अवगत कराया।

भयंकर दुखांत

प्रथम जत्थे में 125 सिक्ख :ामिल हो गये थे। रास्ते में मलौद में हथियार लेने के लिए एक सरदार के घर उन्होंने हमला किया तथा दो आदमी सरदार के मारकर तथा दो अपने व्यक्ति मरवाकर कुछ जख्मियों को छोड़कर जत्था 15 जनवरी की सुबह मलेर कोटले के बूचड़ खाने पर जा टूटा। घंटे सवा घंटे की लड़ाई में सात व्यक्ति मारे गये। दिन चढ़ते तक यह :ाब्द गाते, जयकारे

बुलाते दस मील की दूरी पर स्थित गांव रड़ के नामधारियों के पास जाने के लिए चल पड़े।

रास्ते में, कोटले से पीछा करते आ रहे पुलिस वालों से कुछ झड़पें हुई। :ोरों की तरह हुंकारते, झूमते हुए एक टीले पर पहुँच गये। यहाँ पर जाकर स. हीरा सिंह ने धरती में बर्छी गाड़ दी तथा कहा : ''बापू जी का इतना ही हुक्म है। हम तो अब तिनका भी नहीं तोड़ेंगे। चलते-चलते सिंह रड़ आ गये। तलवारों को धार लगायी। हीरासिंह ने कहा : 'हमें गुरू तेगबहादुर जी का जितना हुक्त था उतना कर दिया है। अब जिसे घर जाना है चले जायें। जिसे :ाी-ा देना है, वह रूक जायें। हमें तो :ाी-ा देना है सो देंगे। जो होगा देखा जायेगा। सिहों से हीरासिंह जी बोले : ''जिसे जान प्यारी है अभी भी चले जाओ।''

(सत्गुरू विलास बाबा सन्तोखसिंह पृश्ठ पाठ-1)

अंत में, भाई हीरासिंह ने सावनसिंह से कहा : ''गिनो तो कितने सिंह है?'' सावन सिंह ने गिनकर कहा : ''सत्तर है।'' हीरासिंह ने वचन किया -बहत्तर चाहिए थे। उसी समय दो जमींदार हाथों में दरांती लिये आकर बैठ गये। हीरा सिंह ने कहा : ''तुम काहे को फँसते हो?'' उन्होंने उत्तर दिया : ''हमें भी आपके साथ सिर देना है।'' खाना बनाया। दूध तथा भोजन खा-पीकर फिर ताज़ा दम हो गये।

(सत्गुरू विलास बाबा सन्तोखसिंह पृश्ठ पाठ-1)

मलीद तथा मलेरकोटले की घटनाओं ने अँग्रेज सरकार को बेचैन कर दिया। दिल्ली को सूचित किया गया। दिल्ली से हिन्द सरकार के दफ़्तर कलकत्ते में पल-पल के बाद ख़बर ली जाने लगी। 15 जनवरी दोपहर के समय डिप्टी-कमि-नर मि. कावन, पुलिस कप्तान मि. परकिन्ज तथा जिले का सिविल सर्जन मि. जे. इनस मलौद पहुँचे। (यहाँ पकड़े गय सात आदमियों में चार कूके थे। इन कूकों को फाँसी की सज़ा के विशय में तार के द्वारा ऊँचे अधिकारियों से पुश्टि की गयी। इतने में मलेरकोटले के हमले सी सूचना भी मि. कावन को मिल गयी। सात लोग मलेर कौअले में मारे गये। अम्बाला डिवीजन का कमि-नर मि. फोरसिथ लुधियाना की ओर खुद चला तो फौजी अधिकारियों से सलाह करके कूकों से निपटने के लिए एक नम्बर गोरखा पलटन, बारह न. रेजिमैंट की कम्पनियाँ तथा एक खच्चर, बातरी और बारहवें रसाले का एक तरूप मलेरकोटले के निकट

खन्ने पहुँचने के लिए, लुधियाना के बचाव के लिए चौवन नं. पल्टन की तीन कम्पनियाँ और गोरों के तोपखाने की आधी बातरी भेजने का आदे-ा दे गया।

मस्ताने अपना काम कर चुके थे। उनका उबाल ठण्डा हो गया था। अब इन्हें सरकारी रोश का सामना करना था। थानेदार भैणी साहब आ पहुँचा। सत्‌गुरू जी से मिला। थानेदार ने मलौद के फिरंगी से मिलने को कहा। पाँचसिंह, बाबा जवाहरसिंह, बाबा काहनसिंह, बाबा साहबसिंह, खजानसिंह और जोगासिंह आदि साथ चले। रात गुड़चूड़ी जाकर रहे। रात को सत्‌गुरु जी ने वचन किया- तुम्हारा इस समय कण-कण बैरी है। सुबह मलौद पहुँचें।

(सत्‌गुरु विलास बाबा सन्तोखसिंह)

मि. कावन ने झगड़े जो मलौद में हुए उनके लिए सत्‌गुरू रामसिंह तथा सूबों को जिम्मेदार ठहराया। अभी उसे मलेर कोटले के झगड़ें की खबर नहीं थी। मलौद में जो भयंकर घटना घटी तथा अब जो सजा देने से जो भयंकरता होने वाली थी, उसके बारे में कावन ने समूह के समक्ष जतला दिया।

गुरु रामसिंह जी मलौद से आते हुए 16 तथा 17 जनवरी के दिन सिआहड़ (लुधियाना) रुके। मलेर कोटले पर सिन्हों के हमले की ख़बर भी यहीं सुनी। यहाँ पर ही सुने तोपों के वे धमाके जिनके साथ मि. कावन ने कूके सिहों के :ारीरों को टुकड़े-टुकड़े करके उड़ाया था। डिप्टी कमि-नर कावन ने कमि-नर का हुक्म या अन्य उच्चधिकारियों की राय की प्रतीक्षा नहीं कि, बल्कि उसने कमि-नर अम्बाला डिवीजन को लिखा : ''मैं बड़ी जिम्मेदारी उठाने लगा हूँ। इसका मुझे भली प्रकार ध्यान है। पर मैं इस बात से संतुश्ट हूँ कि मैं यह काम सरकार के लाभ के लिए कर रहा हूँ। क्योंकि इस क्रांति के पौधे को जड़ से ही उखाड़ कर फेंक देना चाहिए।

(नामधारी इतिहास स. नाहरसिंह पृश्ठ 413)

अतः ब्रिटि-ा सरकार की भलाई के लिए खालसा राज्य के हितैशी तथा गोवध के विरोधी सिखों को पुलिस दस्तों के साथ गाँव रड़ से मँगवा कर 17 जनवरी, 1872 के दिन, जमालपुर के पास परेड मैदान में सिक्ख रियासतों की तोपों से उड़ा दिया। नौ तोपों में से दो तोपें सम्भव आक्रमण की रोकथाम के लिए तथा सात तौपें सिखों को भूनने के लिए लगायी गयी। सिंह सात तोपों

के आगे बारी-बारी सात-सात करके प्रसन्नचित से आते, सीधे खड़े होकर प्राण देते। इस अवसर पर पुलिस की नफरी 750 थी। पकड़े गये कूकों में से 49 कूकों को हजारों लोगों के सामने यह सबक सिखाने के लिए सज़ा दी गयी। एक वि-ानसिंह नामक कि-ोर ने कावन की दाढ़ी को तब तक पकड़े रखा, जब तक उसका सिर धड़ से अलग न हो गया। कावन की सुरक्षा के लिए उसके पास खड़े किसी व्यक्ति ने उसका सिर तलवार से कलम कर दिया।

सिंहों का इस उत्साह से बलिदान हो जाना उस भावना का प्रतीक था जो सत्गुरू रामसिंह जी ने आम मनुश्य में पैदा कर दी थी। आका-ा में बोटी-बोटी होकर उड़ते अपने से पहले बलिदानी को देखकर दूसरे को प्रेरणा मिलती तथा वह भी उसी उत्साह से तोपों के आगे जाते। हजारों लोग जिन्हें क्रांति से तौबा करने के उद्दे-य से यहाँ एकत्रित किया गया था, त्राहि-त्राहि कर रहे थे। पर कूके :ाहीद मरने-मिटने का एक आदर्-ा इतिहास लिख रहे थे।

गुरु रामसिंह का सिक्ख बनते समय हर किसी को यह :ाब्द याद करवाया जाता था।

जो तयो प्रेम खेलन का चाओ
सिर धर तली गली मेरी आओ
इत मारग पैर धरीजै
सिरू दीर्ज काणि ना कीजै।।

इस कठिन परीक्षा में कूके सिंह पास हो गये थे। इतनी निर्भयता तथा उत्साह से गुरु अर्जुन, गुरु तेगबहादुर की :ाहीदी से मँजे हुए तथा गुरू रामसिंह से प्रेरित लोग ही मर सकते थे।

कूकों के पकड़े गये इस गिरोह को जब कानून के सामने पे-ा किया गया तो :ाहीदों के सरदार हीरासिंह तथा मि. कावन की बात को बाबा सन्तोखसिंह ने सत्गुरु विलास में इस प्रकार वर्णन किया है :

''बिल्ले (अँग्रेंज) ने हीरासिंह से पूछा : ''तुम ने गदर क्यों मचाया है?'' हीरा सिंह ने उत्तर दिया : ''हम फिरंगियों का राज नहीं चाहते। अपने भाइयों का राज चाहते है। जब तक तुम्हारा राज नहीं खत्म होता हम ग़दर मचायेंगे। सिर देंगें तथा लेंगें। बार-बार जन्म लेकर तुम्हें मारेंगे। तुम गो-वध करते हो जो हमारे लिए असह्य है।'' बिल्ला (अँग्रेंज) बोलाः ''हम जानते हैं तुम ने राज के

लिए गदर किया है। पर राज हमें खुदा का दिया हुआ है, हमसे राज छीनना आसान नहीं।''

अँग्रेंज अफ़सर की बात ठीक थी। आसानी से राज कहाँ छीने जाते हैं। सिर देने ही पड़ते हैं। सो नामधारियों ने सिर देने का श्रीगणे-ा कर दिया था।

18 जनवरी को 16 सिहों को तोपों से उड़ाकर अँग्रेंज अफ़सरों ने सुख का साँस लिया। इस जत्थे में दो स्त्रियाँ भी थीं, वे भी भाईयों के साथ :ाहीद होने को तैयार थीं। पर उन्हें रियासत पटियाला के बहादुरगढ़ किले में कैद कर दिया गया था।

पहले 49 सिहों को कावन ने सीधे अपने हुक्म से, सरकार की भलाई के लिए तोपों से उड़ाया। दूसरे 16 सिहों को अगले दिन अपनी ही कचहरी लगाकर कमि-नर फोरसिथ के हस्ताक्षर करवाकर तोपों के टुकड़े-टुकड़े करके उड़वा दिया। इतने में गुरु रामसिंह जी तथा खास-खास सूबों को इलाहाबाद के किले में बन्दी बनाने के लिए गाड़ी पर चढ़ा दिया गया।

कूका आंदोलन उस समय उग्रवादी :ाूरवीरों के द्वारा एक बार फिर बलिदान के समुद्र में डूब गया। अब राजनीतिक दबाव की बारी थी।

कूका आंदोलन सूबा साहबसिंह की कहानी से ओतप्रोत है। इसलिए संक्षेप में इसका वर्णन करना जरूरी है:

निर्वासन

गुरू रामसिंह जी तथा साहबसिंह मि. कावन के बुलावे पर घोड़ियों पर बैठकर मलौद गये थे। एक गड्डा भी साथ था। थोड़े समय बाद उस पर गुरु रामसिंह जी बैठ गये। इस समय सबकी आँखों के आगे उस भयंकर घटना की तसवीर अनेक पक्षों से आ रही थी। कभी विचार-विमर्-ा होता, कभी ख़ामो-ाी छा जाती, कभी एक जोरदार वाक्य से खामो-ाी भंग कर हँसी मजाक भी हो जाता। रास्ता तो तय करना ही था। वापसी में जब सियाहड़ की ओर चले वो बाबा जवाहरसिंह ने सूबा साहबसिंह जी से खेड़खानी की : ''साहबसिंह अब कोठरी में :ारदाई पीने को नहीं मिलेगी।''

(सत्गुरू विलास, बाबा सन्तोखसिंह)

बात तो चाहे सूबा साहबसिंह की सुनाकर की गयी थी पर यह बात बाबा जवाहरसिंह पर

भी लागू होती थी।

:ाहीदों जत्थे की तैयारी के समय सत्‌गुरु रामसिंह जी ने मस्तानों को नैह से कहा : 'तुम कहते हो आज्ञा दो, मैं कुछ नहीं कहता क्योंकि पनीरी छोटी है। अभी समय नहीं है। अभी भजन वाणी करो।' (सत्‌गुरु विलास बाबा सन्तोखसिंह)

पर कौन सुनता था। जिस कठिनाई का आज सामना करना पड़ रहा था उसी के लिए आज सत्‌गुरु जी सिक्खों के समक्ष कह रहे थे। पर उग्रवादियों को रोकने का अर्थ था कायरता तथा गद्दारी।

गदर के 14 बरस बाद इस दूसरी महान क्रांति को असफलता का मुँह देखना पड़ा, परन्तु आगे आने वाले महान स्वतंत्रता संग्राम में इस अद्‌भुत बलिदान ने हमे-ाा प्रेरणा दी। जब सरदार भगतसिंह :ाहीद ने फाँसी के तख्ते पर चढ़ने से पहले विदे-ाी हाकिमों को ललकारा था तब उसमें ज्ञानी रत्नसिंह और हीरासिंह की आत्मा बोल रही थी। वही :ाब्द दूसरे मुख से निकल रहे थे जो युगों से महकूम अपने हाकिमों को ललकारने के लिए कहते थे।

उलझन में पड़े हुए सत्‌गुरूजी तथा सूबे, जब 17 जनवरी, 1872 को दोपहर के बाद भैणी साहब पहुँचे तो इससे भी बढ़कर होने वाली घटना का जिक्र यहाँ पर एकत्रित नामधारियों की जबान पर था। सत्‌गुरू जी को वापिस आया देखकर सबकी साँस में साँस आयी तथा मन का बोझ हलका होने लगा था कि कमि-नर फोरसिथ का परवाना लेकर साहनेवाल का थानेदार फिर आ गया। उसने बताया कि अभी लुधियाना जाना है।

16 जनवरी 1872 को पंजाब के लाटसाहब ने दिल्ली से कलकत्ते वायसराय हिन्द को लम्बा-चौड़ा तार भेजा जिसमें उसने अम्बाला डिवीजन के कमि-नर को गुरु रामसिंह तथा उसके सूबों की गिरफ्तारी के अधिकार दे दिये थे। इसी दिन पंजाब सरकार के सेक्रेटरी को कलकत्ते चिट्‌ठी लिखी। लाट साहब ने (गुरु) रामसिंह तथा उसके बड़े प्रभाव-ााली सूबा साहबसिंह, रूढ़सिंह लखासिंह, काहनसिंह, ब्रह्मसिंह, जवाहरसिंह, मलूकसिंह तथा हुक्मसिंह को गिरफ्तार करने के हुक्म दे दिये है। (गुरु) रामसिंह की गिरफ्तारी करने के हुक्म दे दिये है। (गुरु) रामसिंह की गिरफ्तारी जल्दी से जल्दी की जायेगी। साथ ही पंजाब सरकार के सेक्रेटरी ने लाटसाहब की ओर से प्रार्थना की कि इस इन

उपरोक्त सभी सज्जनों के विरूद्ध रैगुले-ान 1818 के अनुसार वारन्ट जारी कर दें।

भैणीसाहब में गुरु रामसिंह जी तथा सूबों की अन्तिम घड़ियों की तसवीर 'सत्गुरु विलास' अनुसार- ''पहले तो वचन किया। घोड़ों पर काठी डालो। फिर कहा - घोड़े थके हुए आये है। गड्डा तैयार करो। आज्ञा हुई- गुरुदŸासिंह गड्डा तैयार करो। कोठे की तरह पखलियाँ लगाकर- पखलियाँ लाकर गड्डा तैयार किया गया। तम्बू की तरह हो गया। दसतार (पगड़ी) :ाी-ा पर बाँधी। एक काली कम्बली ऊपर ओढ़ी। वचन किया : अरदास मैं करता हूँ। आपने अरदास की। कम्बली को ओढ़कर गड्डे में बैठ गये। सब सिंह खरास के कोने के पास खड़े कर दिये। कहा-आये कोई ना आओ- सवा ग्यारह रू. का कड़ाह प्र-ााद बनाना, बाँटकर अपने-अपने घर चले जाना....रात को कोई सोये न। जब गड्डा सड़क पर गया तो दो घुड़सवार आगे, दो पीछे कुछ फ़ासले पर साथ चले।

18 जनवरी को मि. फोरसिथ ने लिखा था : ''यदि समूचे तौर पर पंजाब के अमन के लिए नही ंतो कम-से-कम ज़िला लुधियाना में :ाान्ति स्थापित करने के लिए मैं यह आव-यक समझता हूँ कि कूका मत के पथ प्रदर्-ाक गुरू रामसिंह की तुरन्त हो पंजाब से दे-ा निर्वासित कर दिया जाये। उसे इलाहाबाद भेज दिया जाये। उसके विशय में हिन्द सरकार के पक्के अन्तिम निर्णय के आदे-ा जारी होने तक उसे इलाहाबाद ही देख-रेख में रखा जाये।'' कमि-नर ने बड़े ज़ोरदार :ाब्दों में लिखा : ''ऐसे आदमी को आज़ाद रहने की आज्ञा देना बेहद खतरनाक है।''

(नामधारी इतिहास स. नाहरसिंह एम.ए. पृश्ठ 461)

19 जनवरी को कमि-नर फोरसिथ ने पंजाब सरकार के सैक्रेटरी को लिखा : ''गुरु रामसिंह दो सूबों साहबसिंह तथा जवाहरसिंह और दो सेवक, गुरुदित्तसिंह और नानूसिंह सहित 17 व 18 की रात को एक बजे मेरे पास (लुधियाने) पहुँच गये हैं। मैंने गुरु रामसिंह से अनेकों प्र-न किये, वह जवाब देते रहे।''

इलाहाबाद

गुरु रामसिंह तथा साहबसिंह आदि सूबे लुधियाना मि. फोरिसिथ के पास पहुँचे। चार बजे तक कमि-नर के प्र-नों का उत्तर देते रहे। फिर प्रातः चार बजे डाकगाड़ी के एक वि-ोश डिब्बे में मि.

जैक्सन को गोरखा गारद के अधीन गुरु रामसिंह जी तथा दो साथ आये सूबे, एक पहले ही लुधियाना से गिरफ्तार किया गया सूबा लखासिंह इलाहाबाद भेज दिये गये। मि. जैक्सन को इनकी निगरानी के विशय में कड़ी हिदायतें दी गयी थी।

गुरु रामसिंह जी तथा सूबों ने भीगी आँखों से अपनी प्यारी धरती को प्रणाम किया। उस धरती को जिसकी पराधीनता की बेड़ियाँ तोड़ने के लिए इतनी बड़ी यातना झेली थी। चाहे असमय की जल्दबाजी के कारण ही। किन्तु वे उनके ही 80 सिक्ख थे जो भारतीयों के सोये जज़्बे को झकझोरने के लिए :हीद हो गये।

क्या होगा? दे-ा किधर जायेगा? नामधारियों के साथ क्या बितेगी? भैणी साहब में क्या होगा? यह सोचते-सोचते ही सारा सफर तय हो गया।

सूबा साहबसिंह ने एक बार रेल में सतूगुरु जी से अपने मन की बात कह ही डाली : ''यूं ही पकड़ लाये, कुछ हाथ भी न दिखाया।'' दीनानाथ जी ने कहा : ''हमने अँग्रेजों की जड़ उखाड़ कर हथेली पर रख ली है।''

(सतूगुरु विलास बाबा सन्तोखसिंह)

सतूगुरु जी का वचन सच्चा था। उसी समय से दूसरे आंदोलन प्रारम्भ हो गये। कोई कानून का विरोध करने वाली, कोई दे-ाभक्त क्रांतिकारी बाबा वाली, भारत नौजबान सभा वाली, बब्बरों वाली एक बाढ़ सरीखी उमड़ती तहरीक इंडियन ने-ानल कांग्रेस की अगुवाई वाली। दे-ा की स्वतंत्रता के पुजारी कूके अलमबरदार तो जलावतन हो गये पर इनके पीछे इतना बड़ा ब्रिटि-ा साम्राज्य हर प्रकार की युक्तियाँ करके भी केवल 75 बरस ही कायम रह सका और आज वह ब्रिटि-ा यूनियन जैक कहाँ है जिसके राम में कभी सूरज नहीं डूबता था।

पूरे सौ बरस बाद गुरू रामसिंह जी के सुपोत्रे, वर्तमान श्री सतूगुरु जगजोत सिंह जी ने नामधारी संगत यू. के. के उद्यम से लंदन में जाकर गुरु रामसिंह जी तथा सूबों की जलावनी :ताब्दी मनायी। दुनिया के महान नगर लंदन के मेयर ने उस सभा की प्रधानगी की जिसमें गोरे :ाही की जड़ें उखाड़ने वाले की :ोभा हो रही थी।

विस्तार में न जाकर–गुरु रामसिंह जी को :ााही कैदी बनाकर ब्रह्मा दे-ा की राजधानी रंगून में नज़रबन्द कर दिया गया। साहब सिंह जी के साथ जो बीती उसे सरकारी कागज़ात के द्वारा ही बयान करेंगे। इससे मामूली तौर पर दूसरे सूबों का जिक्र भी आ जाना स्वभाविक है।

इलाहाबाद के मैजिस्ट्रेट को 11 कूकों के रैगूले-ान 1818 के आधीन वारंट भेज दिये गये। जब प्रयाग राज के किले में निम्नलिखित सूबे रह गये। पहले ग्रुप में से बाबा जवाहरसिंह, सूबा साहबसिंह और बाबा लखासिंह। बाद में बाबा काहनसिंह, बाबा ब्रह्मसिंह, बाबा रूढ़सिंह, बाबा मलूकसिंह, बाबा हुक्मसिंह, बाबा मानसिंह, तथा सरदार मंगलसिंह गिरफ़्तार करके जल्दी ही भेज दिये गये थे।

चिी पत्र

आओ अब हम सरकारी चिठ्ठी पत्र की आव-यक कतरनों की संक्षिप्तता को तिथिवार पढ़ें तथा सरकारी दृश्टि से सारे अगले हालात को समझें। पौने सैकड़े से अधिक कूकों को फाँसी लगी। तोपों के आगे खड़ा करके उड़ा दिया। कूका आन्दोलन के प्रमुख व्यक्तियों को इलाहाबाद किले में कैद कर दिया। कूका आन्दोलन के प्रमुख व्यक्तियों को इलाहाबाद किले में क़ैद कर दिया। गुरु रामसिंह जी को दे-ा निकाला देकर अँग्रेंज सरकार ने कूकों के विरूद्ध प्रचार किया। उन पर आदि मुजरिमों की पाबन्दियाँ लगा दी। भैणीसाहब में फौज़ भेजकर, तला-ियाँ लेकर यहाँ के श्रद्धालुओं को प-ाुओं की भांति हाँक कर उनके घर पहुँचाकर बहुत-सी काग़जी कार्यवाही भी की।

अपने पिठ्ठुओं तथा चापलूसों से, देसी राजा–महाराजों, नवाबों, जागीरदारों से गुरु रामसिंह तथा सूबों के विरूद्ध मैमोरेंडम लिखवाये। अख़बारों में उल्टी–सीधी सामग्री छपवाई ताकि दे-ा के लोगों को बता सके कि गुरु रामसिंह तथा उसके सूबे अपने अनुयाइयों को बहकाकर दे-ा में गड़बड़ी करने वाले थे। अँग्रेंजों ने बिना मुकधमे, दलीलों तथा अपीलों के कूकों को तोपों से उड़ाकर पंजाब की जनता के लिए बड़ा उपकार का काम किया है– एक बड़ी मुसीबत से बचाया है।

गिरफ्तार करके इलाहाबाद भेजे गये सूबों के विशय में पंजाब के ज़िलों से पुलिस की रिपोर्टें मँगवायी गयी। उन सबको एक तरफ रखकर यहाँ केवल गुजरांवाले के डी.एस. पी. की ओर से पंजाब के आई.जी. पुलिस को जो लम्बी चिट्ठी लिखी गयी, उसमें से एक–चौथाई अनुच्छेद का

अनुवाद करते हैं-

नामधारी सिद्धांत

29.3.1872 : 15 जुलाई 1871 को मैंने अपनी खुफ़िया रिपोर्ट में था कि (सूबा) ब्रह्मा सिंह वरनी ज़िला ःोखपुर में आया था तथा उसने कूका सिद्धान्तों का प्रचार आरम्भ किया था। वह कई दिन वहाँ रहा। आस-पास के कूके इकट्ठे किये। कुछ नये कूके बनाये। तथा (गुरु) रामसिंह के निम्नलिखित आदे-ा सुनाये :

(1) जिन औरतों ने अमृत छका हो वह अपने बालों का सिर पर जूड़ा न करें।

(2) वह कछहरा (कच्छा) पहने।

(3) सारे सिक्ख, चाहे वह स्त्री हो या पुरूश, अपना लेन-देन साफ करें। न वह कर्ज लें और न दें।

(4) वह अगले आदे-ा तक घर आदि न बनायें। हां, अपने हाथ में पैसा रखें।

(5) गुरु साहब ने नोटिस दे दिया है कि महन्त साहबसिंह तथा काहनसिंह (उनके वज़ीर) जिन्हें नेपाल में प्रतिनिधि के रूप में भेजा गया है उन्होंने नेपाल में राजा की ओर से बड़ी इज्जत तथा सहायता प्राप्त की है।

आगे चलकर इसी चिठ्ठी में डी.एस.पी. लिखता है : 22 जुलाई की मेरी खुफ़िया रिपोर्ट में मैने नोट किया था कि ब्रह्मसिंह पर भरपूर नज़र रखी जा रही है। मेरा दृढ़ वि-वास है कि कूके दुश्टता पर उतरेंगे तथा मेरा यह भी विचार है कि उनका यह एक निर्णयात्मक प्रभाव है कि पंजाब में पुनः सिक्ख राज की स्थापना का दिन निकट है।

बयान

23, 24, 25 अप्रैल को सै-ान जज मि. मैकनाव ने इलाहाबाद पहुँचकर सब सूबों के बयान लिये। सूबा साहबसिंह जी के बयान का कुछ अं-ाः

''मुझे पाँच-छः वर्श पहले मैं, काहनसिंह, सुधसिंह तथा जवाहरसिंह सूबे बनाये गये थे।

सवा वर्श पहले मैं, काहनसिंह, अतरसिंह जीवनसिंह तथा दो अन्यों के साथ खच्चरों तथा दो भैंसों को लेकर नेपाल गया। खच्चर टिक्का और भैसें राजा नेपाल को भेंट में दी। वहाँ दस-बीस (कूके) सिक्ख राजा नेपाल की सेवा में थे। एक एडजुटेंट है तथा दूसरा जमादार...मेरी बतौर सूबा घोड़ों के अस्तबल, फ़सलों की संस्था की ओर ध्यान रखने तथा स्टाक बेचने की ड्यूटी थी। कुछ साल पहले हरिद्वार में मैंने कई घोड़े बेचे। मुनाफ़ा लंगर को दे दिया जाता था। मैं सत्गुरु रामसिंह जी के साथ जाया करता था तथा कूके बनाया करता था।''

इस बयान के आधार पर मैकनाब ने नोट लिखा : 'सूबा साहबसिंह बुद्धिमान चतुर तथा दृढ़ इरादे वाला सभी सूबों में सबसे योग्य है।'

'मैं सिफ़ारि-ा करूँगा कि (1) साहबसिंह (2) लखासिंह (3) काहनसिंह को आजीवन निर्वासित करके बन्दी रखा जाये।'

पंजाब सरकार की ओर से मि. मैकनाब की रिपोर्ट पर टिप्पणी लिखी गई : ''प्रारम्भ करने के लिए, चाहे प्रथम व्यक्ति साहबसिंह है। साहबसिंह (गुरु) रामसिंह के पिछले दिनों नेपाल को जाने वाले मि-ान का राजदूत था। वह सभी पुलिस अफ़सरों की किताबों में दर्ज है। जैसे कि : 'गुरू रामसिंह का आ-ाातीत उत्तराधिकारी' उसका खुफ़िया सूबा,' (गुरु) रामसिंह का लेफ्टिनेंट' सदा गुरु रामसिंह के संग,' सब सूबों में सर्वाधिक सम्मान पाने वाला सूबा' तथा मि. मैकनाब ने उसे पढ़ा-लिखा, महŸवाकांक्षी चालबाज, गुरु रामसिंह को नित नये रूप से उत्प्रेरित करने वाले बताया है।

''यह एक सीधी गवाही है, उसके सरणम कूका प्रचारक होने के विशय में। कुछ और भी सबूत है जिन्हें मेरे विचारानुसार एक ओर नहीं फेंका जा सकता, कि भैणीसाहब' लोहड़ी के समय सूबों में वह भी वहाँ मौजूद था और उसने हीरा सिंह, लहनासिंह की पार्टी की मलेरकोटले मार्च करने के लिए प्रोत्साहित किया।

''मि. मैकनाब सोचता है कि यदि उस अकेले को पंजाब भेजने की आज्ञा मिल जाये तो 'कूकाइज्म' एकदम सजीव हो उठेगा। अतः हमारे लिए घातक सिद्ध होगा। अतः मि. मैकनाब पक्की

पाबन्दी की माँग करता है।

''यह सुझाव उचित है। यह आदमी खतरनाक, धोखबाज है। अनभिज्ञता, अज्ञानता तथा धर्मान्धता पंजाब के लोगों में पाई जाती है जिसे कभी भी उकसाया जा सकता है। उसके हाथ में भभककर जल उठने वाला मसाला है। वह इस संप्रदाय के राजनीतिक भाग का मुख्य नेता है।''

13 जून 1872 : िमला से हिन्द सरकार के अंडर सेक्रेटरी एच.डब्लू. वैलजली ने पंजाब सरकार के कार्यवाहक सचिव को लिखा कि इलाहाबाद में कूके कैदियों के लिए मुनासिब जगह नहीं हैं उनके लिए जल्दी ही आर्डर दिये जायें। पंजाब सरकार के पूछने पर मि. जे. डब्लू मैकनाव ने सब कैदियों के विशय में विचार करके निम्नलिखित निर्णय भेजा :

''मैं सिफारि-ा करूँगा कि (1) साहबसिंह (2-3) लखासिंह तथा काहनसिंह को आजीवन निर्वासन में कैद रखा जाये। अन्य केसों के विशय में पंजाब में कूकाइज्म की स्थिति के अनुसार निबट लिया जाये।''

17 जुलाई, 1872 : पंजाब के डिप्टी इंसपैक्टर, पुलिस इ.सी. वेली ने लम्बी रिपोर्ट, टिप्पणियों तथा नोटों में तमाम कूका :ााही कैदियों के चरित्र पर प्रका-ा डाला है। इसमें सूबा साहब सिंह जी को पहले नम्बर पर लिखा है तथा साथ ही नोट दिया है कि इसे आजीवन दे-ा से निर्वासित किया गया।

लंबी रिपोर्ट के अन्तिम पैरों में लिखा गया कि अंडेमान (काला पानी) इनके लिए उचित स्थान नहीं। इनमें से तीन को मौलमीन (ब्रिटि-ा बर्मा) तथा तीन को अकयाब भेजा जाये। बाकी पांच को असीरगढ़ या चुनार ठीक रहेगा। या दोनों जगह पर बाँट दिये जायें।''

19 जुलाई 1872 : मि. हौब हाउस को लिखा कि कैदियों के विरूद्ध गवाहियों के आधार पर देखें कि उन पर कौन-सा केस बनता है। हौब हाउस ने सब कुछ विचार कर बताया कि पैनल कोड की कई धाराओं के अन्तर्गत कूके फँसाये जा सकते है। नीचे लिखी गयी धारायें संभव समझी गयी-

(1) लड़ाई छेड़नी, दंगा करने की कोि-ा-ा करना। या मलका के विरूद्ध ऐसी लड़ाई करने की भावना उकसाना। इस गुनाह के बदले में मृत्यु दंड दिया जा सकता है। एक्ट ग्स्ट, 1860

सैक्-ान 121 ।

(2) किसी भी भावी हमले के लिए ृाड्यंत्र करना या मलका की प्रभुता को छीनना या सरकार को अपनी :ाक्ति से डराना या नुकसान पहुँचाना। इसकी सज़ा आजीवन दे-ा निकाला हो सकता है। एक्ट ग्गटप्प्ए 1869 सैक्-ान 121 ।।

(3) लड़ाई छेड़ने की तैयारी करना, इसकी सजा आजीवन दे-ा निर्वासन हो सकती है। एक्ट ग्स्टए 1861 ।

(4) लड़ाई आरम्भ करनी, लड़ाई छेड़ने का यत्न या साथी इ-ियाटिक पावन के विरूद्ध जंग को उकसाना। इसके लिए आजीवन दे-ा निर्वासिन की सज़ा हो सकती है। एक्ट ग्स्टए 1861 सैक्-ान 25।

(5) किसी इलाके को लूटने का अपराध करना या ऐसी तैयारी करना। इस अपराध में सात वर्श की कैद तथा जुर्माना हो सकता है। एक्ट ग्स्ट 1860 सैक्-ान 126।

(6) सरकार का नुकसान करने के लिए कहकर उकसाना। इसके बदले में आजीवन दे-ा निर्वासन की सज़ा दी जा सकती है। एक्ट ग्गटप्प्ए 1860 सैक्-ान 124 ।।

(7) ऐसा कोई भी जुर्म करने के लिए उकसाना। एक्ट ग्स्ट, 1860 सैक्-ान 107.108।

कूका :ाही कैदियों के विरूद्ध पुलिस की ओर से गवाहियों की पूरी तैयारी की गयी। पक्के गवाहों या निजी विरोधता वाले पक्के गवाहों की ओर से कूके कैदियों के विरूद्ध मनमानी गवाहियाँ दिलायी गयी।

सूबा साहबसिंह के विरूद्ध गवाही देने वाले थे – निहालसिंह, देवासिंह प्रतापसिंह तथा दौलतराम।

25 जुलाई 1972 : गुरू रामसिंहजी तथा सूबों पर मुकद्दमें की क़िस्म समझनें तथा खुली अदालत में केस चलाने के विशय में संबंधित अफ़सरों को राय जानने के लिए एक सरकूलर बाँटा गया। कुछ–एक ने खुली अदालत में मुकद्दमें चलाने की राय दी। परन्तु गवर्नर–जनरल ने पंजाब सरकार की राय तलब करने के लिए आदे-ा दिया। उसने अपनी राय दी– मैं ट्रायल के विरूद्ध हूँ।

इस तरह वकीलों की प्रसिद्धि हो जाती है। एक अन्य उच्चाधिकारी ने लिखा कि मुकद्दमा बिलकुल न चलाया जाये। वह तो ऐसी बुराई को फाँसी लगाने का सामना करने को भी तैयार था।

7 अगस्त 1872 : हिन्द सरकार के कार्य वाहक सचिव एच. एस. डेम्पियर ने पंजाब सरकार को लिखा कि लेफ्टिनेंट गवर्नर जनरल की राय है कि कूके सरदारों पर खुलेआम मुकद्दमा चलाने के बजाय उनकी राजनैतिक कैदियों की भाँति कैद रखा जाये।

इसके उपरांत पृथक-पृथक प्रांत तथा हिन्द सरकार का पत्र-व्यवहार हुआ। उसके उŸार में असीरगढ़ के क़िले के असिस्टेंट इंजीनियर एडजुटैंट ने 17 अगस्त को सूचना दी - :ाही कैदियों के क्वार्टरों तथा गार्डरूम के मध्य 18 फुट लम्बा और किचनरूम बनवा कर पहले लंगर खाने को :ाही कैदियों के लिए खाली कर दिया है।

18 अगस्त को सूचना दी गई कि अदन जेल में एक अलग इमारत की कूका कैदियों के लिए मरम्मत की गयी है। यह इमारत 1838 में बलोच :ाही कैदियों के लिए बनायी गयी थी।

31 अक्तूबर, 1872 : हिन्द सरकार के सचिव मि. डेम्पियर ने उŸार प-िचम प्रांतों की सरकार के सचिव को कूके :ाही कैदियों को इलाहाबाद किले में से निकालकर निम्नलिखित स्थानों पर नज़रबंद करने के लिए लिखा :

1. बम्बई सरकार से पत्र व्यवहार करके रूढ़सिंह, मलूकसिंह और पहाड़सिंह की असीरगढ़ के किले में भेज दिया जाये।
2. चीफ़ कमि-नर ब्रिटि-ा बर्मा से खत पत्र करके जवाहरसिंह, लखासिंह तथा ब्रह्मा सिंह को मौलमीन भेज दिया जाये।
3. मानसिंह तथा हुकमसिंह को चिनार के क़िले में भेजा जाये।
4. साहबसिंह, काहनसिंह तथा मंगलसिंह की अगले आदे-ाों तक इलाहाबाद ही रहने दिया जाये।

लगभग साढ़े नौ महीनों तक नामधारी सूबों को पंजाब से दूर, सबसे अज्ञात इलाहाबाद क़िले में कड़े पहरे में रखा गया तथा उन्हें क्षमायाचना के लिए भी प्रेरित किया गया। पर कोई भी ऐसा न था जो अपने इस कर्म को गुनाह समझता। कूके कैदियों को खतपत्र करने या किसी को भी मिलने

की आज्ञा नहीं थी। इस आदे-ा के लिए संबंधित जेलों को बार-बार चेतावनी दी जाती थी।

28 जून, 1872 तक पंजाब के गवर्नर को डिप्टी-कमि-नरों द्वारा पंजाब के तमाम जिलों तथा रियासतों से राजा, महाराजा, नवाबों, ज़ागीरदारों, सरदारों म्यूनिसिपल मैम्बरों, जैलदारों, नम्बरदारों तथा अन्य ऐसे लोगों (जो उठाईगीरी तथा अवसरवाद के कारण ही सुख भोगते है) की ओर मि. कावन तथा फोरसिथ के द्वारा कूकों पर ढाये गये जुल्मों की सराहना भरी अर्जियाँ मिली। यह उन्ही लोगों का ग्रुप था जिनके सहारे पर अँग्रेंज सरकार हमारे दे-ा पर सौ बरस तक राज कर सकी।

24 जनवरी, 1873 : पंजाब सरकार ने कमि-नरों, डिप्टी-कमि-नरों और इंसपेक्टर जनरल पुलिस को लिखा कि कूकों पर लगी पाबंदी जारी रहे। पाँच से अधिक व्यक्ति कहीं भी इकट्ठे न हों। सावधानी रखो।

12 फरवरी 1873 : अदन दीप में पूरा प्रबन्ध करके, हिन्द सरकार की ओर से उŸार प-िचमी प्रांतों की सरकारों को लिखा गया कि कूका कैदी साहबसिंह तथा काहनसिंह बम्बई सरकार से तालमेल करके (इलाहाबाद से) अदन भेज दिये जायें। जब तक पंजाब सरकार की ओर से मंगलसिंह के बारे में सूचना नहीं मिलती, वह इलाहाबाद ही रहे।

12 फरवरी 1873 : गवर्नर जनरल इन कौंसिल के आदे-ाानुसार हिन्द सरकार के गृह विभाग के सचिव ने अदन के सुपरिटेंडेंट जेल को लिखा : साहबसिंह को निजी निगरानी में जेल में रखा जाये। अपनी देखरेख में रखते हुए इसके साथ कठोर व्यवहार किया जाये। जैसे कि रैगूले-ान नम्बर 3,1881 के अनुसार है।

25 मार्च 1873 : बम्बई सरकार को पोलीटिकल रैजिडेंट अदन ने लिखा कि कूका :ााही क़ैदी साहबसिंह तथा काहनसिंह मेल स्टीमर 'पे-ाावर' द्वार कल यहाँ पहुँच गये थे। उन्हें अदन जेल में नवनिर्मित क्वार्टरों में रखा गया है।

10 सितम्बर 1873 : गवर्नर जनरल के दफ्तर में बम्बई की ओर से आयी रिटर्न अनुसार बयान किया गया कि क़ैदी साहबसिंह का स्वास्थ्य ठीक है किन्तु दूसरा कैदी इंजुदनल हर्निया का मरीज है।

16 सितम्बर 1873 : हिन्द सरकार ने गृह विभाव को लिखा कि कूका कैदी जो अदन में हैं जेल में न रखे जायें बल्कि पुलिस की निगरानी में रखे जायें।

30 अक्तूबर 1873 : हिन्द सरकार को बम्बई सरकार की ओर से बताया गया कि आदे-ाानुसार साहबसिंह तथा काहनसिंह कूके कैदियों को पुलिस की निगरानी में रखा :ाुरू कर दिया है। इनके लिए दो स्पे-ाल निगरान नियुक्त कर दिये गये है। साहबसिंह तथा काहनसिंह की उस घर में रहने दिया जा रहा है जिसमें पहले :ााही कैदी यंग लाट को रखा गया था।

2 जनवरी 1875 : सुपरिटेंडेंट जेल अदन ने फस्ट असिटेंट पोलिटिकल रेजिडेन्ट अदन को लिखा :

- दोनों कूकों पर अदन में रहने के कारण स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ा है।

- काहनसिंह की आँखों तथा :ारीर की द-ाा खराब हो गयी है।

- मेरी राय है कि इन्हें जलवायु बदलने के लिए अदन से किसी और जगह भेज दिया जाये।

9 जनवरी 1875 : पोलिटिकल रैजिडेंट ने बम्बई सरकार को लिखा -मैं अनुरोध करता हूँ कि कूके कैदियों को मार्च के अंत तक जरूर किसी ठंडी जगह भेज दिया जाये। यदि वे अदन में रहे तो मुझे उनके जीवन का खतरा लगता है।

1 मार्च 1875 : पंजाब सरकार ने हिन्द सरकार के पूछने पर लिखा - हमें कोई एतराज नहीं पंजाब तथा इलाहाबाद के अतिरिक्त इन कैदियों को जहाँ मर्जी ही बदल दिया जाये।

गवर्नर जनरल ने इस पर नोट लिखा। उनके लिए हजारीबाग ठीक रहेगा। बंगाल के सचिव मि. टेलर को लिखो।

15 मार्च 1875 : बंगाल सरकार के जुडी-ाल डिपाटमेंट के सचिव ने हिन्द सरकार के सचिव गृह विभाग को लिखा : हज़ारीबाग सेंट्रल जेल में तो जगह नहीं हैं, पर एक अलग इमारत योरूपियन पैटें-ारी में उन्हें रखा जा सकता है।

24 मार्च, 1875: कमि-नर पुलिस बम्बई ने बम्बई सरकार के राजनीतिक विभाग के सचिव को सूचित किया : एक गोरा इंसपेक्टर तथा दो देसी सिपाहियों के साथ कल साहबसिंह तथा

काहनसिंह को वाया इलाहाबाद हज़ारी बाग भेज दिया गया है।

21 मई 1875 : सिविल सर्जन ने जेल सुपरिटेंडेंट हज़ारी बाग को लिखा : कूका साहबसिंह को डायविटीज (मधुमेह) हो गया है। बीमारी गंभीर प्रकार की है। यह धीरे-धीरे बढ़ रही है तथा दवा-दारू कम ही असर कर रहा है।

रिहाई?

किसी प्रकार मार्च 1876 के महीने हिन्द सरकार के गृह विभाग (जुडी-ान) ने पंजाब सरकार से पूछा कि यदि कोई कूका :ााही कैदी रिहा करने के योग्य हो।

जून के अन्त में जाकर पंजाब सरकार के सचिव ने उत्तर दिया कि यह कोई पूछने वाली बात है। आज के समय में कूके कैदियों को पंजाब में लौटने की आज्ञा नहीं दी जा सकती।

5 मई 1878 : बंगाल सरकार के जुडी-ाल और राजनीतिक विभाग के सचिव ने हिन्द सरकार के गृह विभाग के सचिव को यह बताया कि जेल के इंसपेक्टर जनरल को हजारी बाग के दोनों कूके कैदियों ने उनकी बदली ब्रिटि-ा वर्मा में करने को दर्खास्त दी है। इससे चिढ़कर बंगाल सरकार के सचिव ने साथ ही लिखा दिया : इस हकीकत की ओर ध्यान दिलाया जाता है कि जब इन कैदियों को केवल सख्त कंट्रोल में ही पैटे-ानरी में रखा गया है कोई सख्त सजा नहीं दी गयी। यह और भी कठोर व्यवहार के योग्य हैं। वि-ोशकर जब तक जब तक इनकी सजा अनि-िचत समय तक जारी रहती है। लेफ़्निंट गर्वनर को कोई कारण नहीं दिखता कि इनको ब्रिटि-ा बर्मा में क्यों बदला जाये। जो जगह बिल्कुल ही यहाँ की जलवायु से भिन्न जलवायु की है।

25 जुलाई 1878 : पंजाब सरकार के कार्यवाहक सचिव ने -िामले से हिन्द सरकार के गृह विभाग को उसकी 12 जुलाई की चिट्ठी के उत्तर में लिखा : ''मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि महत्तता की दृश्टि से साहबसिंह खुद (गुरु) रामसिंह कूका चीफ़ से अपने पंथ में दूसरे स्थान पर है। अतः काहनसिंह अति <u>क</u>ुरपंथी तथा प्रभाव-ााली कूका नेता है।

यह दोनों ही मेरे विचार से अपने पंथ में वि-ोश महानता रखते है। लेफ़्टिनेंट गर्वनर उन्हें जेल की चहारदीवारी से बाहर घूमने की भी सिफ़ारि-ा नहीं करते। इस तरह करने से वह अपने पंथ

के दूसरे मैम्बरों तथा पंजाब से तालमेल करने के योग्य हो जायेंगे।

अतः इस प्रकार पिंजड़े में पड़ा :ााही कैदी साहबसिंह अपने स्वास्थ्य को ठीक न रख सका। अदन जाते समय उसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा था, परदो बरस बाद ही जब वह हज़ारीबाग लौटा तो काफ़ी कमज़ोर हो चुका था। हज़ारीबाग आते ही दूसरे महीने साहबसिंह को मधुमेह हो गया तथा पंजाब सरकार के अडियल रवैये के कारण पाँच बरस हज़ारीबाग जेल में पुलिस की निगरानी में रह कर दम तोड़ गया।

जिस समय साहबसिंह ने अन्तिम बार भारत भूमि को निरा-ा आँखों से देखा, तब उसकी आयु 45 वर्श की थी।

अन्तिका

ब्रिटि-ा सरकार ने बड़ी तिकड़मों और निर्दयता से दे-ाों के दे-ा जीते। दे-ा-भक्तों को ज्यादा-से-ज्यादा यंत्रणाएँ दीं, जेलों में डाला, फाँसी पर लटकाया, कत्ल करवाया। दे-ा निर्वासित करे दे-ा की भूमि से पृथक किया पर वे अपने राज को अचल अटल नहीं बना सके। कूके दे-ाभक्तों भारत भूमि के प्रथम :ाांतिपूर्ण ढंग से स्वतंत्रता प्राप्त करने के इच्छुकों को सत्गुरु रामसिंह जी को तथा सूबों को अपने दे-ा से अलग करके भी वे चैन से न सो सके।

कूका आंदोलन के प-चात्, गुरु हरीसिंह (गुरु रामसिंह के छोटे भाई) जी के समय में रूसी सरकार से तालमेल पैदा करने की कोि-ा की गयी। महाराजा दलीपसिंह से साँठगाँठ करके उसे भारत आने के लिए प्रेरित किया तथा सरकारी दवाबों की परवाह न करते हुए दे-ा के समूचे आंदोलन में भरपूर सहयोग दिया। अन्त में 15 अगस्त, 1947 को अपना प्यारा भारत दे-ा स्वतंत्र करवा लिया।